वर्ष 44 अंक 01 जनवरी 2017

₹15/-

हँसती दुनिया

Happy New Year 2017

हँसती दुनिया

● वर्ष 44 ● अंक 01 ● जनवरी 2017 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

सी. एल. गुलाटी, प्रभारी पत्रिका विभाग

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9 हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II, नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org
kids.nirankari.org

Subscription Value

	India/ Nepal	UK	Europe	USA	Canada/ Australia
Annual	Rs.150	£15	€ 20	$25	$30
5 Years	Rs.700	£70	€ 95	$120	$140

Other Countries

Equivalent to U.S. Dollars as mentioned above.

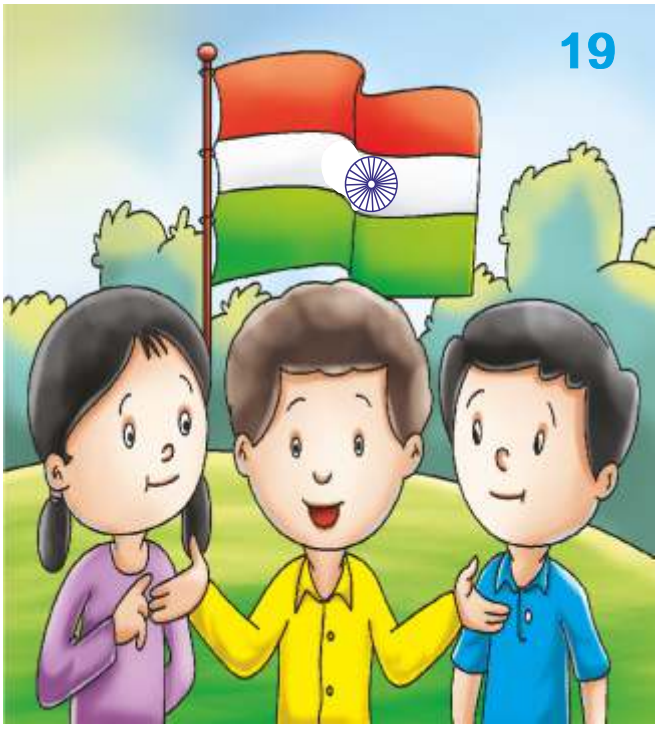

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
9. अनमोल वचन
17. समाचार
20. वर्ग पहेली
44. पढ़ो और हँसो
46. जन्मदिन मुबारक
47. आपके पत्र मिले
48. रंग भरो परिणाम
50. चित्र पहेली

चित्रकथाएं

12 दादा जी
34 किट्टी

कहानियां

9. ब्रह्मा की परीक्षा
: डॉ. विजय प्रकाश त्रिपाठी

21. बोलो कौन सही?
: जितेन्द्र मिश्र 'जीतू'

31. कव्वे की करतूत
: ओमदत्त जोशी

39. बुढ़िया की अक्लमंदी
: राधेलाल 'नवचक्र'

कविताएं

7. नववर्ष का अभिनंदन
: नदीम हसन 'चमन'

19. गणतंत्र ने दिया, संविधान देता है हक
: हरजीत निषाद

29. भारत देश हमारा प्यारा
: महेन्द्र कुमार वर्मा

38. धूप
: सुकीर्ति भटनागार

41. पैगाम
: लतिका धमेजा

41. दरोगा की माफी
: दिनेश 'दर्पण'

विशेष / लेख

8. सर्दियों में बगैर खाए कैसे ...
: विभा वर्मा

16. अपने खून से रंगूगी खादी
: राजेन्द्र यादव 'आजाद'

18. उपयोगी नीम
: पृथ्वीराज

24. राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय महत्वपूर्ण दिवस
: अभय कुमार जैन

26. अरुणाचल प्रदेश और नागालैंड का राजकीय पशु– मिथुन
: डॉ. परशुराम शुक्ल

30. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल

42. देश–विदेश के विचित्र वृक्ष
: राहुल शर्मा

सबसे पहले

शुभकामना दिल से...

आज सभी एक–दूसरे को 'नया वर्ष मुबारक हो, नववर्ष मंगलमय हो' कह रहे थे। स्कूल के सभी अध्यापक भी अपने साथियों को इसी तरह सम्बोधित कर रहे थे। हमारी कक्षा में भी सभी बच्चे एक–दूसरे को इसी तरह कह रहे थे। परन्तु एक बच्चा कक्षा में आया और अपने सहपाठी से बोला– ''ओए, हैपी न्यू ईयर'' उसने भी आगे से उसी लहज़े में जवाब दे दिया। इतने में कक्षा में हमारे अध्यापक पहुँच चुके थे। सभी बच्चों ने खड़े होकर उनका अभिवादन किया। अध्यापक ने सभी बच्चों का अभिवादन स्वीकार किया और कहा– आप सभी को 'नया साल मुबारक हो'; बच्चों ने भी अध्यापक से कहा– 'सर, आपको भी!'

फिर एक विद्यार्थी ने पूछा– सर, यह नया वर्ष हमें क्या सन्देश देकर जाएगा?

अध्यापक ने अपनी बात आरम्भ की– ''हम जैसा चाहेंगे, वैसा ही हम बन जाएंगे।'' अध्यापक की बात पूरी होने से पहले ही एक बच्चे ने प्रश्न किया– इस नये वर्ष में ऐसी क्या ताकत है, ऐसी कौनसी जादू की छड़ी है कि जैसा हम चाहेगें वैसा ही हम बन जाएंगे।

बच्चे की बात धैर्यपूर्वक सुनकर अध्यापक ने कहा– हम स्वयं अपना ही प्रतिबिम्ब हैं। अगर हमने मात्र औपचारिकता निभाने के लिए शुभकामनाएं दीं हैं तो हमें भी वैसी ही औपचारिक शुभकामनाएं मिलेंगी। जैसा बीज धरती में बोया जाएगा वैसा ही फल निश्चित है। गेंदे के फूल के बीज को बोकर गुलाब नहीं मिल सकते, चाहे हम उस गेंदे के फूल को कितना ही खाद–पानी दें और उसकी कितनी भी देखभाल करें। इससे गेंदे के फूल का विकास तो होगा। उसकी अच्छी देखभाल से वह अपने जैसे अनेकों फूलों को जन्म भी देगा, परन्तु गेंदा गुलाब कभी नहीं बन पाएगा।

इसी तरह हम जो कुछ भी बनना चाहते हैं और उसके लिए हमें जो भी कार्य करना है, उस कार्य को मात्र औपचारिकता समझ कर नहीं करना है बल्कि पूरी मेहनत, पूरी शक्ति और सामर्थ्य से उसमें जुट जाना है। फिर हम चाहें या न चाहें हमें सफलता अवश्य मिलेगी। परिश्रम ही जादू की छड़ी है। परिश्रम तन से करेंगे तो तन स्वस्थ रहेगा, मन से करेंगे तो मन स्वस्थ रहेगा। तन–मन से परिश्रम केवल उसी तरफ करना है जिस तरफ हमारा लक्ष्य है।

प्यारे साथियों! नववर्ष सभी को एक और सन्देश दे रहा है कि मैं फिर आऊंगा, मेरा आना हर वर्ष होता ही रहेगा क्योंकि मेरा लक्ष्य यही है। मुझे हर वर्ष आना है, सभी को देखने कि क्या हम अभी भी सिर्फ औपचारिकता निभा रहे हैं या एक–दूसरे के दिल के साथी बने हैं या फिर एक और लम्बा इन्तजार...।

हम और इन्तजार नहीं करेंगे। हमारा सारा परिवार परमपिता–परमात्मा से दिल से, प्रेम से आशीर्वाद की कामना करता है कि समस्त मानवता के लिए नया वर्ष शुभ मंगलमय हो, हर पल शुभ हो और सुखमय हो।

–विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ : हरजीत निषाद

सम्पूर्ण अवतार बाणी !!!

पद संख्या : 144

बिन वेखे दे उस्तत करना अम्बर नूं हथ पाणा ए।
बिन वेखे दे उस्तत करना पुट्ठे रस्ते जाणा ए।
बिन वेखे दे उस्तत करना सच्चे नूं झुठलाणा ए।
बिन वेखे दे उस्तत करना पाणी नूं अग लाणा ए।
बिन वेखे दे उस्तत करना अग नाल प्यास बुझाणा ए।
बिन वेखे दे उस्तत करना ऐवें उमर गंवाणा ए।
बिन वेखे दे उस्तत करना फोके तरले पाणा ए।
बिन वेखे दे उस्तत करना मुड़ मुड़ आणा जाणा ए।
वेख के अक्खीं सिफ़त जे करिए तां असली वडियाई ए।
अवतार जिन्हां मिल गुरु पछाता ओहनां सोझी पाई ए।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि प्रभु प्राप्ति की सूझ (समझ) हासिल करना आसान नहीं है। प्रभु प्राप्ति के लिए सद्गुरु की पहचान करना आवश्यक है। जिन्हें सद्गुरु की पहचान हो जाती है, उनको इस प्रभु की समझ आ जाती है। संसार के लोग बिना देखे ही परमात्मा की स्तुति–प्रशंसा कर रहे हैं।

बाबा अवतार सिंह जी कह रहे हैं कि बिना देखे प्रभु की स्तुति करना आकाश को हाथ लगाने जैसा है। बिना देखे प्रभु की स्तुति करना उल्टे रास्ते पर जाने जैसा है। जैसे कि उसे जाना पूर्व की ओर है लेकिन वह पश्चिम दिशा की ओर जा रहा है। बिना देखे प्रभु की स्तुति करना सत्य को झुठलाने के समान है। हम सभी जानते हैं कि प्यास आग से नहीं पानी से बुझती है। अगर आग को आग से बुझाने का प्रयास करेंगे तो यह और बढ़ जाएगी। बिना देखे परमात्मा की स्तुति–यशोगान करना आग से प्यास बुझाने के समान है। इस प्रकार की प्रभु स्तुति करना व्यर्थ में उम्र गंवाने जैसा है। बिना देखे स्तुति करना, व्यर्थ की मिन्नतें करने, अनावश्यक गिड़गिड़ाने जैसा है ऐसा करने वाला जन्म–मृत्यु के आवागमन वाले चक्कर में फंसा ही रहता है।

बाबा अवतार सिंह जी कह रहे हैं कि परमात्मा को देखकर इसकी प्रशंसा–यशोगान करने में ही श्रेष्ठता है, वास्तविक लाभ है। जो ऐसा नहीं करते वो व्यर्थ ही जन्म गंवाकर चार दिन में संसार से चले जाते हैं।

वास्तविकता में जिन्होंने सद्गुरु के चरणों में नतमस्तक होकर गुरु की पहचान की, इस प्रभु का बोध, इसकी समझ उन्हीं को आई; बाकी व्यर्थ में ही अपना जीवन गंवाकर संसार से रुख़सत हो जाते हैं।

अनमोल वचन

संग्रहकर्ता : जगतार 'चमन' (अनूपगढ़)

★ ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों का जीवन व्याख्यानों पर नहीं कर्म पर आधारित होता है।
— बाबा गुरबचन सिंह जी

★ आत्मा का न जन्म होता है न मृत्यु। एक तन को छोड़कर दूसरे को धारण करने का ही नाम है, जन्म और मृत्यु।
— निरंकारी राजमाता जी

★ इन्सानियत का दामन छोड़कर कामयाबियों का कोई महत्व नहीं है।

★ धर्म वह प्रक्रिया है जिससे मनुष्य, मनुष्य बनता है।

★ सद्गुरु की रहमत बिना परमात्मा से दूरी बनी रहती है।

★ लाखों मीलों की दूरी तय कर डाली परन्तु दिलों की दूरी इन्सान तय न कर सका।

★ विश्व के हर मुल्क में मानव रहते हैं। अगर मानव एकता हो जाती है तो विश्व एकता हो जाती है।

★ भक्ति भागने का नहीं, जागने का नाम है।

★ प्रेम और अहिंसा की राह अपनायें।
— बाबा हरदेव सिंह जी

★ जगत को बदलने से सुख मिलेगा यह भ्रम है। तू अपने आपको बदल ले सुख तेरे पीछे दौड़ेगा। — सन्त बाणी

★ मानव जाति से प्यार करना ही परमात्मा से प्यार करना है। — धर्माधिकारी

★ सामान्य व्यक्ति सोचने में समय गंवाते हैं और समझदार व्यक्ति सोच–समझकर वक्त का इस्तेमाल करते हैं। — स्टीफन आर कावे

★ जीवन में एक बार जो फैसला कर लिया तो पीछे मुड़कर मत देखो क्योंकि पलटकर देखने वाले इतिहास नहीं बनाते।
— चंद्रगुप्त मौर्य

★ शिक्षक मोमबत्ती के समान है जो स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश देती है।
— सर्वपल्ली राधाकृष्णन

★ जीतने वाले अलग चीजें नहीं करते, वो चीजों को अलग तरह से करते हैं।
— शिव खेड़ा

★ सभी व्यक्तियों में ईश्वर को देखना चाहिए।
— योगानन्द

★ यदि हम गिरते हैं तो अधिक अच्छी तरह चलने का रहस्य सीख जाते हैं। — अज्ञात

★ जब कभी सम्भव हो, दयालु बने रहिए और यह हमेशा सम्भव है। — दलाई लामा

★ अगर आप सूर्य की तरह चमकना चाहते हैं तो आपको उसकी तरह पहले स्वयं को तपाना भी पड़ेगा। — अटल बिहारी वाजपेयी

2017

कविता : नदीम हसन 'चमन'

नववर्ष का अभिनंदन

आओ करें नववर्ष का,
मिलजुल कर अभिनंदन।
ईर्ष्या, द्वेष और शुत्रता से,
खाली हो सबका मन।।

नई भोर, नये मौसम से,
आओ कर लें यारी।
नई कॉपी, कलम, किताबें,
बने शक्ति हमारी।।

भूत भूलें, करें भविष्य में,
अच्छे काम, अच्छी बात।
आशीष, स्नेह, ममता, दया से,
प्रकाशमय सदैव हो रात।।

दीन–दुखियों के बनें सहारा,
अपना देश रखें खुशहाल।
फूट अगर जो डाले दुश्मन,
खींच ले उसकी खाल।।

भाईचारे की ज्योत बिखेरे,
नववर्ष का सुन पैग़ाम।
कर्ज न भूलो इस माटी का,
बूंद–बूंद चुकाना दाम।।

जानकारी : विभा वर्मा

सर्दियों में बगैर खाए कैसे जीव शीत निद्रा में चले जाते हैं

प्रत्येक जीव में यह विशेषता होती है कि वह प्रतिकूल परिस्थियों में भी अपना अस्तित्व बनाये रखते हुए अपनी रक्षा करने में माहिर होते हैं। ध्रुव प्रदेशों में जहाँ वर्षभर बर्फ जमी रहती है ऐसे में उनके भोजन की भी कमी हो जाया करती है तब वे निष्क्रिय होकर लम्बे समय के लिए सो जाते हैं जिसे शीत निद्रा कहते हैं। इस समय प्राणी बिना आहार के ही रहते हैं। यही कारण है कि उनके शरीर के रक्त संचरण का कार्य भी कम हो जाता है। हृदय का स्पन्दन भी अत्यन्त धीमे–धीमे होता है। रक्त संचालन और श्वास प्रश्वास का कार्य भी मन्द गति से चलता है। तेज सर्दी से अपनी रक्षा करने के लिए जीव–जन्तु शरद ऋतु के आरम्भ होने के समय से ही अपने को ठीक ढ़ग से तैयार कर लेते हैं। इसके लिए वे अपने शरीर में चर्बी (ऊर्जा) का भंडारण कर लेते हैं तथा अपने यकृत और मांसपेशियों में ग्लाइकोजन का संचय कर लेते हैं। शीतकाल में यह चर्बी और ग्लाइकोजन उनके जीवन को बनाये रखते हैं।

प्राणियों की शीत निद्रा के सम्बन्ध में वैज्ञानिकों ने परीक्षणों–निरीक्षणों के द्वारा अनेक महत्वपूर्ण तथ्यों को संग्रह किया है। ऐसे में परीक्षणों से पता चला है कि ये जीव स्वाभाविक अवस्था में एक मिनट में 16 बार सांस लेते हैं। हृदय 55 बार धड़कता है परन्तु वही जब शीत निद्रा लेते हैं तो एक मिनट में केवल दो बार सांस लेते हैं और हृदय मात्र 16 बार ही धड़कता है।

कई प्राणियों का जीवन ऐसा है कि उनके लिए शीत निद्रा लेना अत्यन्त ही आवश्यक हो जाता है क्योंकि प्रबल शीत के कारण उनकी खाद्य वस्तुओं का अभाव हो जाता है पर कुछ प्राणी प्राकृतिक वातावरण में रहने पर तो शीत निद्रा लेते हैं पर यही चिड़ियाघर में बन्दी जीवन व्यतीत करने पर ऐसा नहीं करते। साथ ही ठंड की तीव्रता के ऊपर ही शीत निद्रा की गम्भीरता भी निर्भर करती है। कभी अगर शीत ऋतु में भी एकाएक गर्मी पड़ने लग जाती है तो निद्रित जीव–जन्तुओं का तापमान ऐसे में बढ़ जाता है एवं वे नींद से जग जाते हैं।

पौराणिक कथा : डॉ. विजय प्रकाश त्रिपाठी

ब्रह्मा की परीक्षा

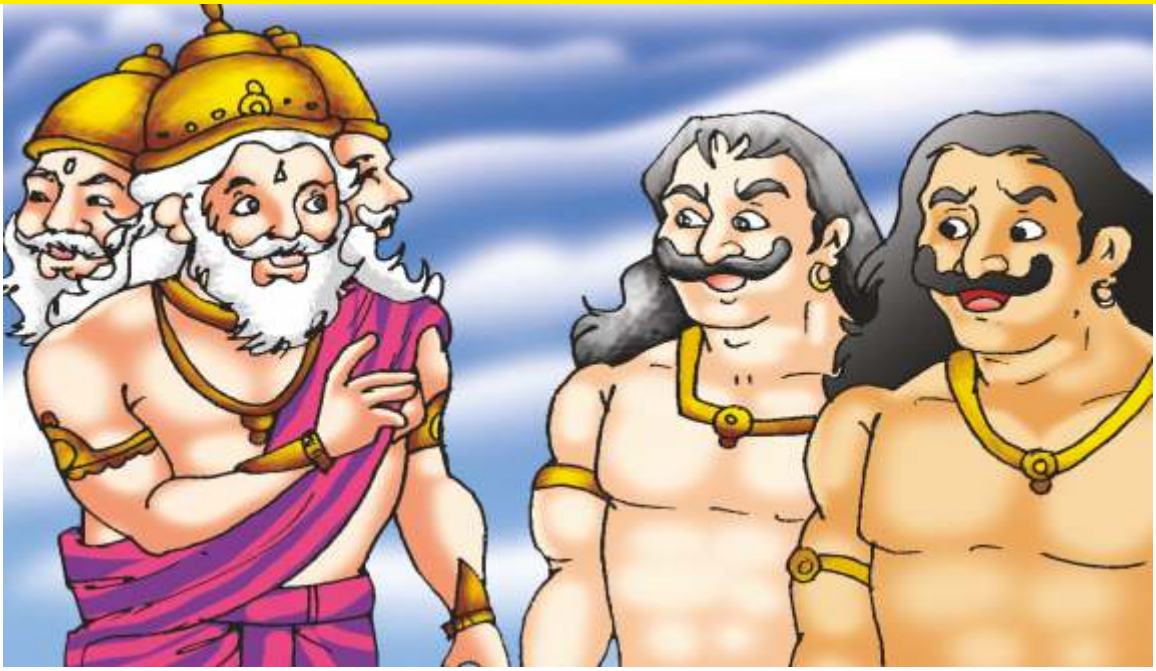

एक बार की बात है। सभी दैत्य एकजुट होकर प्रजापति ब्रह्मा के पास पहुँचे और शिकायत की दृष्टि से बोले– पितामह! हम सभी दैत्य और देवता आपके पौत्र कश्यप ऋषि की सन्तान हैं, बल्कि हम दैत्य तो उनके सबसे बड़े पुत्र हैं, देवता हम लोगों से छोटे हैं। फिर भी आप हमेशा देवताओं से ही ज्यादा स्नेह–प्रेम क्यों करते हैं? आपके द्वारा यह पक्षपात क्यों होता है?

दैत्यों की यह बात सुनकर पहले तो ब्रह्माजी मुस्कुराए और फिर बोले– दितिपुत्रों! तुम्हारा यह कहना बिल्कुल उचित ही है। तुम सभी दैत्य और देवता मेरे प्रिय पौत्र कश्यप ऋषि की सन्तान हो, अतएव मुझे दोनों पर समान रूप से स्नेह है। लेकिन देवताओं के प्रति कुछ अधिक हो जाता है, क्योंकि मैं बुद्धि का अधिष्ठाता और सृष्टिकर्ता हूँ।

यह सुनकर दैत्यों को देवताओं के प्रति और भी गुस्सा आया। वे पितामह से कहने लगे– आपने हम दोनों की परीक्षा लिए बिना किस आधार पर महत्वपूर्ण निर्णय ले लिया। जो गुण आप देवताओं में बतला रहे हैं, वे हम में भी तो हो सकते हैं? पहले आप परीक्षा ले लें, फिर अपने मत को प्रकट करें।

–समय की प्रतीक्षा करो, तुम्हारी परीक्षा भी हो जायेगी।– पितामह ब्रह्माजी ने ऐसा कहकर दैत्यों को विदा कर दिया।

कुछ माह बीत जाने के उपरान्त एक दिन पितामह ब्रह्माजी ने अपने दोनों प्रपौत्रों दैत्य और देवताओं को घर पर

भोजन हेतु आमंत्रित किया। दोनों पक्ष अपने–अपने समूह के साथ ब्रह्मलोक पहुँचकर पूज्य पितामह ब्रह्माजी के श्रीचरणों में उपस्थित हुए। दैत्यों में देवताओं के प्रति पहले से ही दुश्मनी की भावना थी, सामने देवताओं को देखकर वे जल–भून उठे। दैत्यों ने पितामह ब्रह्माजी से कहा– हम लोग एक साथ बैठकर भोजन नहीं कर सकते।

पितामह ब्रह्माजी ने दैत्यों की इच्छा को स्वीकार कर लिया। उन्हें पहली पंक्ति में आसन दिलाया। देवता वहाँ से दूर पृथक कक्षों में अपने समय की प्रतीक्षा करने लगे। दैत्यगण बड़ी प्रसन्नता के साथ भोजन करने हेतु पंक्ति में बैठ गये थे। उनके समक्ष ब्रह्मभवन की सुस्वादु, दिव्य खीर के बर्तन रखे थे। दैत्य आचमन करके भोजन प्रारम्भ करने वाले ही थे कि अचानक पितामह बोल उठे– दैत्यों! आप लोग निश्चय ही भोजन लें परन्तु इसके पूर्व मेरी एक शर्त है, उस पर पहले आप लोग ध्यान दें।

दैत्यों ने पूछा– वह क्या है पितामह?

पितामह बोले– वह यह कि भोजन लेते समय आपके हाथ की कुहनी नहीं मुड़नी चाहिए।– यह शर्त सुनकर दैत्य मन ही मन क्रोध से आगबबूला हो उठे परन्तु उन्हें पितामह की शर्त का पालन तो पूरा करना ही था। दैत्य सीधे हाथ से भोजन का ग्रास उठाते, बिना कुहनी मोड़े हाथ मुंह के निकट तो जा नहीं सकता था अतः ग्रास मुंह की सीध में ही भूमि पर गिर जाता। इस प्रकार दैत्य भूखे ही उठ खड़े हुए। वे क्रुद्ध और लज्जित भी हुए।

अब पितामह ने दैत्यों की ओर मुस्कुराते हुए एक व्यंग्यपूर्ण दृष्टि फेंकी और उन्हें निकट ही उचित आसन पर बैठा दिया। इसके उपरान्त देवताओं की भी वैसी ही पंक्ति

बैठी, उन्हें भी भोजन परोसा गया और भोजन के पूर्व वही शर्त उनके लिए भी पितामह ब्रह्माजी ने रखी।

देवताओं ने एक क्षण कुछ सोचा, फिर परस्पर मौन रूप से इशारा किया। वे दो पंक्तियों में आमने–सामने बिल्कुल निकट बैठ गये। अब भोजन करने में कोई कठिनाई न थी। आमने –सामने बैठे देवतागण बिना हाथ की कुहनी मोड़े एक–दूसरे के मुख मे मधुर सुस्वादु ग्रास खिलाने लगे। भोजन से कुछ ही क्षणों में सभी तृप्त हो गये।

ब्रह्माजी की परीक्षा पूरी हो चुकी थी। दैत्यों के पास अब कुछ कहने को शेष नहीं था। ब्रह्माजी ने देवताओं की अप्रतिम विशेषता बुद्धिमत्ता व सहयोग भावना को प्रमाणित करके उनके प्रश्न का समुचित उत्तर दे दिया था।

छोटी–छोटी परेशानियों को ऐसे दो मात

★ सर्दी के कारण सिर दर्द हो रहा हो तो सोंठ, काली मिर्च, अदरक एवं तुलसी की चाय पियो।

★ सर्दी के कारण नाक बन्द हो रहा तो थोड़ी अजवायन गर्म करके रुमाल में बांधकर सूंघ लो।

★ यदि कफ की शिकायत हो रही है तो रात को सोते समय एक गिलास गर्म पानी में दो–तीन चुटकी नमक डालकर पी लो। इससे कफ आसानी से निकल जाता है।

– प्रस्तुति : विभा वर्मा

दादा जी

कहानी एवं चित्रांकन
अजय कालड़ा

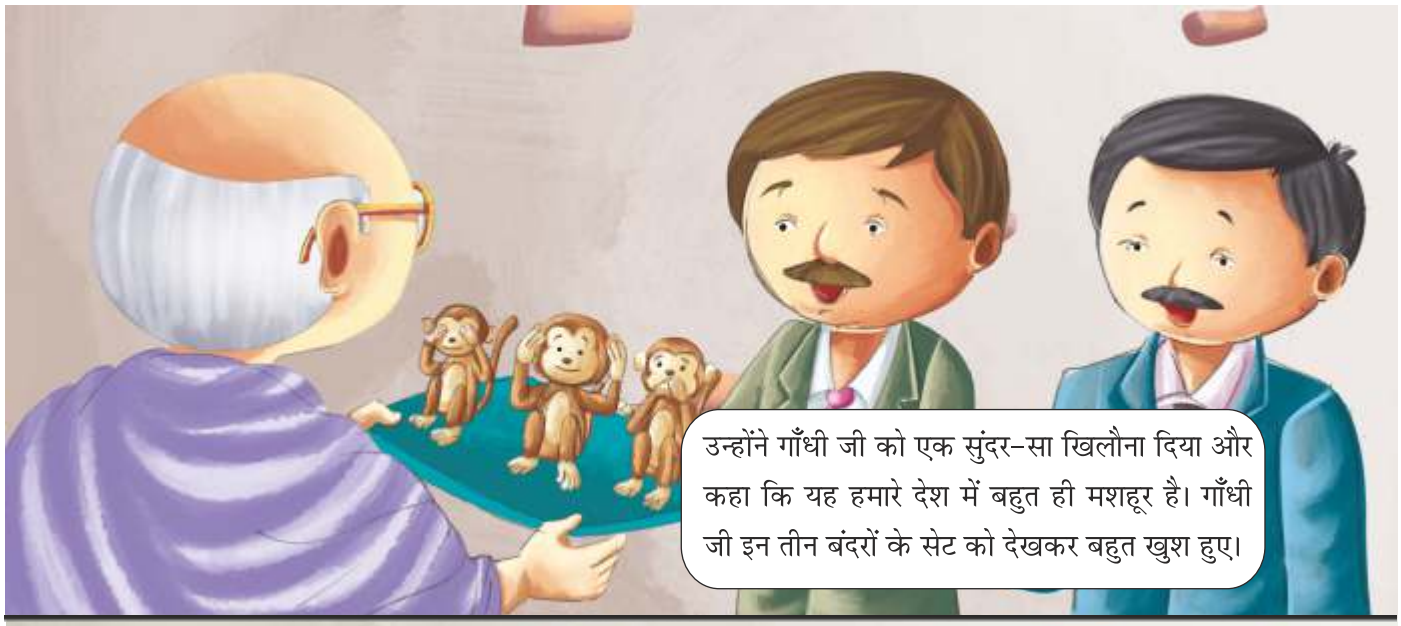
उन्होंने गाँधी जी को एक सुंदर-सा खिलौना दिया और कहा कि यह हमारे देश में बहुत ही मशहूर है। गाँधी जी इन तीन बंदरों के सेट को देखकर बहुत खुश हुए।

उनमें से एक बंदर ने अपनी आँखों पर और दूसरे ने अपने कानों पर एवं तीसरे ने अपने मुँह पर अपना पंजा रखा हुआ था। यह खिलौना जापान और चीन दोनों देशों की संस्कृति से जुड़ा हुआ है।

यह खिलौना बहुत सुंदर है। मैं इसे हमेशा अपने साथ रखूँगा।

उसके बाद गाँधी जी जहाँ भी जाते, उस खिलौने को हमेशा अपने पास रखते और उसका बहुत ध्यान भी रखते। जो लोग उनके साथ काम करते थे, उन्हें ये सब देखकर बड़ा आश्चर्य होता था।

एक दिन गाँधी जी उस खिलौने को सामने रखकर बड़े ध्यान से देख रहे थे। उनके एक साथी ने पूछा– 'बापू, आप इस साधारण से खिलौने को इस तरह देखते रहते हैं जैसे इससे कोई विशेष यादें जुड़ी हों।

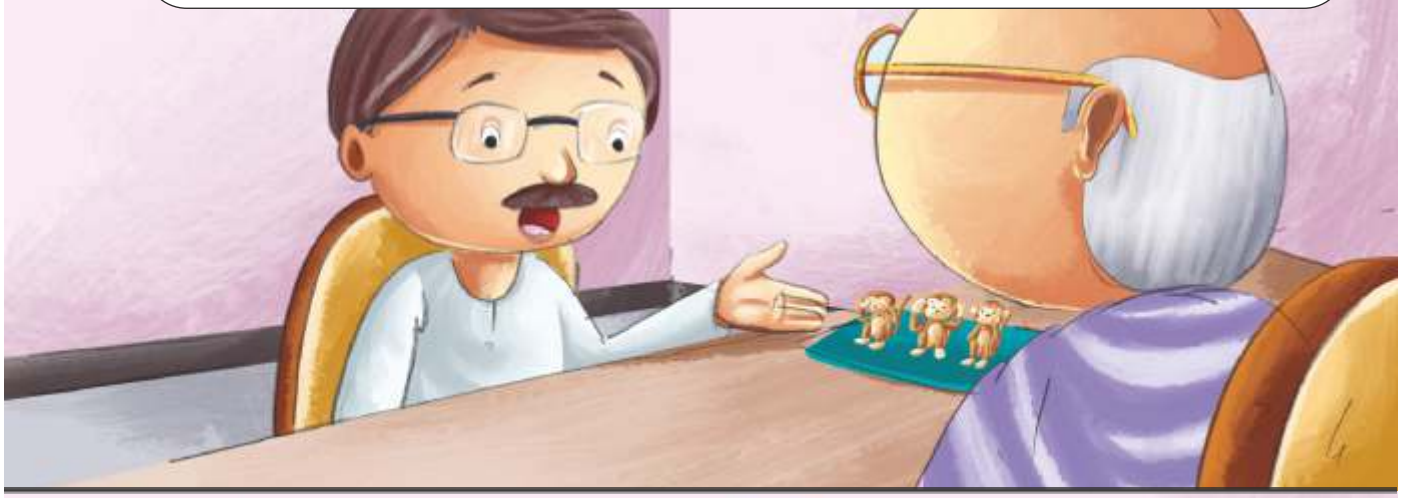

गाँधी जी बोले–'ये कोई साधारण खिलौना नहीं है। ये जो बंदर बने हुए हैं, ये तीनों हमें अलग-अलग शिक्षा देते हैं। देखो, ये बंदर जिसने अपनी आँखों पर हाथ रखा है, ये समझाता है कि कभी बुरा मत देखो और इसका नाम मिजारू बंदर है।

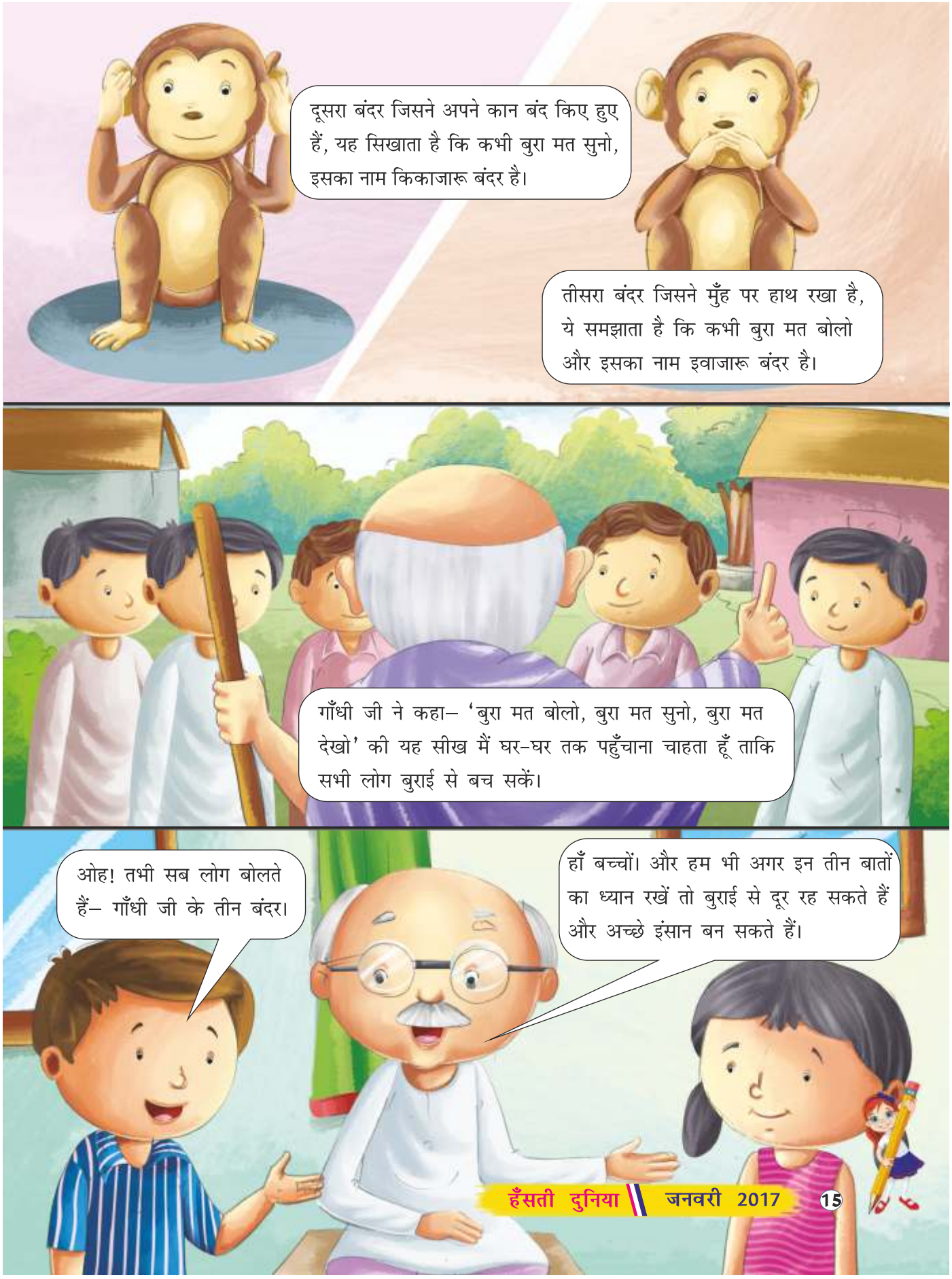
दूसरा बंदर जिसने अपने कान बंद किए हुए हैं, यह सिखाता है कि कभी बुरा मत सुनो, इसका नाम किकाजारू बंदर है।
तीसरा बंदर जिसने मुँह पर हाथ रखा है, ये समझाता है कि कभी बुरा मत बोलो और इसका नाम इवाजारू बंदर है।
गाँधी जी ने कहा– 'बुरा मत बोलो, बुरा मत सुनो, बुरा मत देखो' की यह सीख मैं घर-घर तक पहुँचाना चाहता हूँ ताकि सभी लोग बुराई से बच सकें।
ओह! तभी सब लोग बोलते हैं– गाँधी जी के तीन बंदर।
हाँ बच्चों। और हम भी अगर इन तीन बातों का ध्यान रखें तो बुराई से दूर रह सकते हैं और अच्छे इंसान बन सकते हैं।

प्रेरक–प्रसंग : राजेन्द्र यादव 'आजाद'

अपने खून से रंगूगी खादी

शेरे पंजाब सरदार भगत सिंह क्रांतिकारी करतार सिंह सराबा के अंध भक्त थे। उनके प्रयासों से सन् 1928 में सराबा के चित्र का अनावरण होना था जिसके लिए भगवती चरण बोहरा एक खादी का कपड़ा खरीद कर लाये जिसे लाल रंग से रंगने के लिए बोहरा जी ने अपनी पत्नी को दिया तो उस वीर नारी ने कहा– ''मैं इसे लाल रंग में अपने लहू से रंगूगी'' और उन्होंने पैनी ब्लेड से अपनी उंगलियां चीर कर खून से खादी को रंग डाला।

अपने लहू से खादी को रंग कर शहीद करतार सिंह सराबा को सम्मान देने वाली वीर नारी कोई और नहीं बल्कि क्रांतिकारियों का सिरमौर दुर्गा भाभी थी।

क्रांतिकारी विचारों से ओत–प्रोत दुर्गा भाभी नौजवान सभा की सक्रिय सदस्य थी और अपने पति भगवती चरण बोहरा की सहयोगी थी। साइमन कमिशन वापिस जाओ के विद्रोह के नायक लाला लाजपतराय की निर्मम हत्या का बदला लेने के लिए क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह और राजगुरु ने 18 दिसम्बर 1928 को लाहौर शहर के व्यस्त बाजार में हत्यारे सांडर्स को सरेआम गोलियों से छलनी कर दिया तो अंग्रेज सरकार इनके पीछे पड़ गयी। जिसके कारण स्वतंत्रता के आन्दोलन को जीवित रखने के लिए भगत सिंह को भगवती चरण बोहरा द्वारा लाहौर से बाहर निकालना आवश्यक हो गया तो उन्हें लाहौर से कलकत्ता पहुँचाने का जिम्मा दुर्गा भाभी को ही सौंपा।

अपने कार्य को अंजाम देने के लिए दुर्गा भाभी ने भगत सिंह को सूट–बूट व हैट पहनाकर साहब बनाया और अपने बेटे को गोद में लेकर उनकी पत्नी बन कर उन्हें सकुशल कलकत्ता पहुँचा दिया और अंग्रेजों के जासूस भगत सिंह को लाहौर में ही ढूंढते रहे।

ऐसी वीरांगना दुर्गा भाभी के त्याग व बलिदान को भुलाया नहीं जा सकता क्योंकि दुर्गा भाभी क्रांति की मशाल थी जो स्वयं जल कर क्रांतिकारियों को मार्गदर्शन देती थी। इन्होंने क्रांतिकारी नौजवान सभा के सिरमौर – भगवती चरण बोहरा, चन्द्रशेखर आजाद व भगतसिंह के साथ मिलकर आजादी की लड़ाई में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया और फिरंगियों के दांत खट्टे किये।

और अन्त में 92 वर्ष की उम्र में 14 अक्टूबर 1999 को गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश) में आजादी की यह मशाल सदा–सदा के लिए हमसे विदा हो गयी।

धन्य है वह धरा जिसमें ऐसे बलिदानियों का जन्म हुआ।

3.7 अरब साल पुराने जीवाश्म मिले

मेलबर्न। वैज्ञानिकों ने दुनिया के सबसे पुराने जीवाश्म खोज निकाले हैं जो 3.7 अरब साल पुराने हैं। यह अब तक सबसे पुराने माने जाने वाले जीवाश्मों से भी 22 करोड़ साल पुराने हैं।

अरबों साल पुराने ये जीवाश्म हमारे ग्रह के बिल्कुल शुरुआती इतिहास से जुड़ी गुत्थियां सुलझा सकते हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ वोलनगोंग के प्रोफेसर एलेन नटमैन के नेतृत्व वाले एक दल ने दुनिया की सबसे पुरानी तलछट चट्टानों में 3.7 अरब साल पुराने स्ट्रोमेटोलाइट जीवाश्म खोज निकाले हैं। ये जीवाश्म ग्रीनलैंड के बर्फीले क्षेत्र के किनारे स्थित इसुआ ग्रीनस्टोन क्षेत्र में पाए गए हैं।

इसुआ स्ट्रोमेटोलाइट जीवाश्म धरती पर जीवन की शुरुआती विविधता के प्रति व्यापक समझ उपलब्ध करा सकते हैं। शोधकर्ताओं का कहना है कि इसका मंगल पर जीवन को लेकर हमारी समझ पर काफी असर हो सकता है। नटमैन ने कहा कि ये जीवाश्म अब तक दुनिया के सबसे पुराने जीवाश्म कहलाने वाले और पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया में पाए जाने वाले स्ट्रोमेटोलाइट जीवाश्मों से भी 22 करोड़ साल पुराने हैं।

हालिया खोज ने जीवाश्मों के रिकॉर्ड को पृथ्वी के भूवैज्ञानिक रिकॉर्ड की शुरुआत तक पहुँचा दिया है। यह खोज धरती के इतिहास की बेहद शुरुआत में जीवन के साक्ष्यों की ओर इशारा करती है। (भाषा)

नासा ने जीनोम का अनुक्रम तय कर रचा इतिहास

वाशिंगटन। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने पहली बार अंतरिक्ष में सफलतापूर्वक जीनोम का अनुक्रम तय कर इतिहास रच दिया। एजेंसी ने अन्तर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) पर इस प्रक्रिया को पूरा किया।

नासा ने कहा है कि अंतरिक्ष में जीवों के डीएनए का अनुक्रम तय करने की योग्यता प्राप्त करने से विज्ञान और चिकित्सा के क्षेत्र में नई संभावनाओं के द्वार खुल गए हैं। अंतरिक्ष यात्री केट रूबिंस ने नासा के बॉयोमोलेकुल सिक्वेंसर प्रयोग के तहत बहुत कम गुरुत्व वाले क्षेत्र में पहली बार डीएनए का अनुक्रम तय किया। नासा ने कहा कि ऐसा संभव होने के बाद अंतरिक्ष यात्रियों में बीमारियों का पता लग सकेगा या आईएसएस में बढ़ रहे रोगाणुओं के बारे में पता चल सकेगा। साथ ही उन पर बीमारी का खतरा है या नहीं, यह भी मालूम चल सकेगा।

—संग्रहकर्ता : बबलू कुमार

जानकारी : पृथ्वीराज

उपयोगी नीम

बच्चों! नीम का पेड़ तो आपने देखा ही होगा। इसका पेड़ आम के पेड़ के समान ही ऊँचा होता है। नीम के पेड़ को लोग अपने घरों के आस–पास लगाना पसन्द करते हैं। इसकी पत्तियां इतनी घनी होती हैं कि सूर्य की किरणें इनमें से होकर पृथ्वी तक नहीं पहुँच पातीं। गर्मियों में इसकी छाया शीतल और आरामदायक होती है।

नीम का स्वाद कड़वा होता है। प्रातःकाल लोग नीम की टहनी तोड़कर दातुन करना पसन्द करते हैं। इससे दांत साफ और निरोग रहते हैं।

नीम की प्रत्येक चीज काम आती है। इसके फूलों की सुगंध अच्छी और गुणकारी होती है। यह वातावरण को शुद्ध करती है। नीम पर लगे फलों को निबौली कहते हैं। कच्ची निबौली का रंग हरा होता है तोड़ने पर इसमें सफेद दूध जैसा रस निकलता है। परन्तु निबौली के पक जाने पर इसका रंग पीला हो जाता है और इसमें से रस निकलता है जो खाने पर मीठा लगता है। इन्हें खाने से पेट की बीमारियाँ दूर हो जाती हैं। निबौली की गुठली से बना तेल साबुन बनाने के काम आता है।

यह साबुन फोड़े–फुंसियों को ठीक कर देता है। बच्चों को होने वाली फुंसियों पर नीम की छाल और हल्दी घिसकर लगा देने से लाभ होता है।

नीम की पत्तियां भी कड़वी होती हैं। शरद ऋतु के अन्त में नीम की पत्तियां झड़ जाती हैं। तभी इन पर छोटी–छोटी नई पत्तियां निकलती हैं। वे अधिक कड़वी नहीं होतीं इन्हें खा लेने से चर्म रोग नहीं होता तथा आँखें भी ठीक रहती हैं। नीम की पत्तियों को पानी में उबालकर नहाने से दाद–खाज, फोड़े–फुंसी आदि में आराम मिलता है।

नीम की पत्तियों को लोग सुखाकर गर्म कपड़ों और किताबों में रखते हैं। ये सूखी पत्तियां अनाज में भी रखी जाती हैं। ऐसा करने से कपड़ों, किताबों तथा अनाज में कीड़े नहीं लगते।

नीम की सूखी पत्तियों को जलाकर उनका धुआँ करने से मच्छर भाग जाते हैं। इस प्रकार नीम के प्रत्येक भाग को किसी न किसी रूप में काम में लाया जाता है। नीम पर्यावरण को शुद्ध करता है। इसीलिए नीम के पेड़ को स्वास्थ्य के लिए लाभदायक माना जाता है।

गणतंत्र ने दिया

छबबीस जनवरी सन् उन्नीस सौ पचास।
गणतंत्र दिवस का गर्वीला अहसास।
प्रथम राष्ट्रपति ने लहराया तिरंगा,
जन गण मन में जागा विश्वास।

दुनिया में श्रेष्ठ भारत का संविधान।
मूल अधिकार देता सबको पहचान।
समता वाला भेदभाव मुक्त यह देश मेरा,
कार्यपालिका संसद न्यायिक विधान।

जाति धर्म प्रान्तों को समता का मंत्र मिला।
देश को सम्मान अति गर्व वाला तंत्र मिला।
हर वर्ष आता पर्व गर्व राष्ट्र भक्ति वाला,
लोकशाही देश में है उत्तम लोकतंत्र मिला।

राजभाषा संघ प्रान्त क्षेत्रीय भाषाएं।
उच्च न्यायालय न्यायालीन व्यवस्थाएं।
गणतंत्र ने दिया भव्य संविधान हमें,
आया गणतंत्र दिवस खुशियां मनाएं।

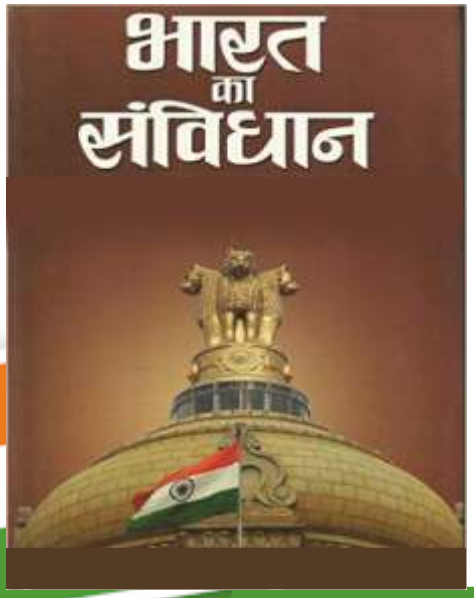

संविधान देता है हक

ताकतवर बहुत है यह गणतंत्र।
बदल देता है यह राज्य तंत्र।
कमजोर नहीं शक्तिशाली है यह,
है सत्ता परिवर्तन का सहज यह यंत्र।

संविधान देता है सबको हक जीने का।
अवसर शासन हेतु साठ महीने का।
जनता बिठाती है सर आँखों पर लेकिन,
बदले में चाहती है शासन करीने का।

गणतंत्र दिवस पर सभी को गर्व है।
देश का यह सर्वोत्तम पर्व है।
समान अधिकार देता है नागरिकों को,
खुली हवा खुली आँखों का ये स्वर्ग है।

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा (रेवाड़ी)

वर्ग पहेली

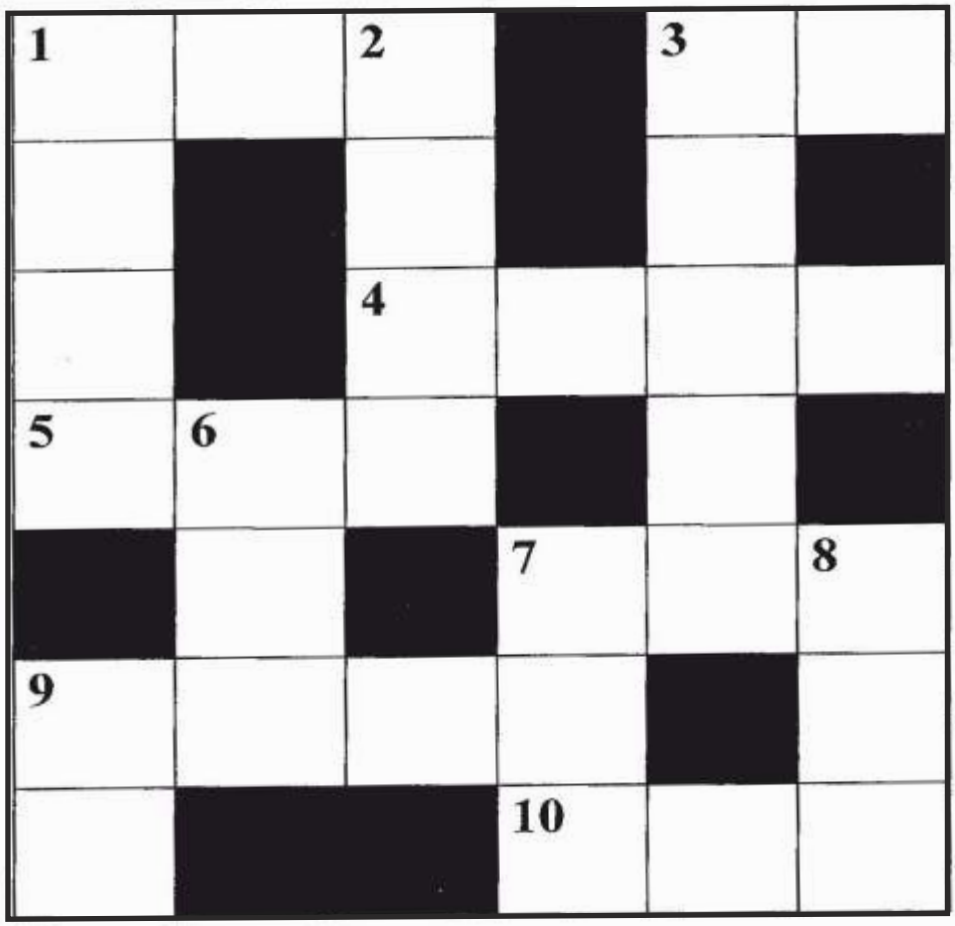

बाएं से दाएं →

1. अशोक स्तम्भ के नीचे लिखा होता है : सत्यमेव ..... ।
3. दिन का विपरीत शब्द।
4. स्वामी विवेकानन्द ने ..... मिशन की स्थापना की।
5. नादानी करने वाला।
7. ..... शब्द का अर्थ सोना भी होता है और धतूरा भी।
9. लोकसभा में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (NDA) में भाजपा का एक सहयोगी दल।
10. अमेरिका की मुद्रा।

ऊपर से नीचे ↓

1. हर वर्ष 4 दिसम्बर को ... दिवस के रूप में मनाया जाता है। (थलसेना/जलसेना)
2. बेमेल शब्द छांटिए : चण्डीगढ़, तेहरान, दिसपुर, श्रीनगर।
3. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के बाद सर्वपल्ली .... भारत के राष्ट्रपति बने।
6. मानव का विपरीत शब्द।
7. कनाडा और भूटान में से जो अमरीका का पड़ोसी देश है।
8. दोहा जिस देश की राजधानी है।
9. शुद्ध शब्द छांटिए : शिक्षा/शिक्शा।

(वर्ग पहेली के उत्तर इसी अंक में हैं)

कहानी : जितेन्द्र मिश्र 'जीतू'

बोलो, कौन सही?

राजपुताना की एक रियासत पर राजा बलदेव सिंह का शासन था। नाम के अनुरूप ही वह बहुत शक्तिशाली थे, साथ ही बुद्धिमान भी। एक दिन वह अपने दरबार में बैठे किसी विषय पर चर्चा कर रहे थे, तभी अचानक सभा में आकर एक व्यापारी बोला– महाराज दरबार में आने की क्षमा चाहता हूँ, मगर मेरी समस्या का हल सुलझने का नाम नहीं ले रही है। जिसे आप ही न्याय कर सुलझा सकते हैं।

राजा ने उसे एकटक देखा फिर बोले– आप कौन हैं? और आपकी क्या समस्या है? कृपया सारी बात स्पष्ट बताएं।

महाराज, मैं इस राज्य का धनाढ्य व्यापारी हूँ। पशुओं का क्रय–विक्रय का मेरा बड़ा कारोबार है। मेरे यहाँ 10 नौकर भी काम करते हैं। आज मैंने बातों ही बातों में अपने नौकरों से प्रश्न पूछा कि इस राज्य में सबसे सुखी व्यक्ति

कौन है? तो सभी ने बिना देरी किए मेरी ही ओर इशारा किया, लेकिन एक नौकर ऐसा है जो मुझ पर सन्देह कर स्वयं को सबसे सुखी व्यक्ति कह रहा है।

–अच्छा वह श्रमिक कौन है जो ऐसी मूर्खतापूर्ण बातें कर रहा है?– राजा के मुँह से विस्मय व आश्चर्य से अनायास निकला।

–महाराज कई सम्मानित लोग भी उसे समझा कर हार चुके हैं लेकिन वह अहंकारी अपनी बात पर अटल है। बस महाराज अब आप ही इसका न्याय कर सकते हैं।– व्यापारी बोला।

राजा का आदेश पाते ही सैनिक उस श्रमिक को पकड़ लाए।

उस व्यक्ति की हालत देखकर राजा के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। धूल–मिट्टी से सना शरीर, तन पर आधे–अधूरे वस्त्र, बढ़ी हुई दाढ़ी, मैला–कुचैला व्यक्ति हाथ जोड़े खड़ा था। अच्छा तो यह बात है। सारी स्थिति समझकर बलदेव सिंह ने हँसकर उस व्यक्ति से पूछा– अच्छा तो आप ही राज्य के सबसे सुखी व्यक्ति हैं।

–जी महाराज!– शान्त खड़े व्यक्ति ने कहा।

–अच्छा तो आप अपने को मालिक से ज्यादा सुखी मानते हैं।– बलदेव सिंह ने फिर पूछा।

–महाराज, मेरा नाम रघुवीर है। मैं पिछले कई वर्ष से मालिक के यहाँ कार्य कर रहा हूँ। मेरे मालिक काफी भले व्यक्ति है। किंतु अहंकार में डूब कर वह स्वयं को सबसे सुखी व्यक्ति समझ रहे हैं। अन्य नौकरों ने काम से निकाले जाने के डर से उनका समर्थन किया है जबकि मुझे इस बात की तनिक भी चिन्ता नहीं।– सारी बात बताकर उस व्यक्ति ने कहा।

–यह तो ठीक है, लेकिन तुम स्वयं गरीब होकर सबसे सुखी कैसे हो?

–बस महाराज इसी का फैसला तो आपको करना है?– बलदेव के पूछने पर व्यापारी बोल पड़ा।

–ठीक है, इसका फैसला हम निर्णय लेकर अगले दिन करेंगे।– कहकर बलदेव सिंह सभा से उठकर चले गये। रात्रि हो चुकी थी, नगर के सभी लोग खा–पीकर सो चुके थे। इसी बीच बलदेव सिंह वेष बदलकर नगर का जायजा लेने को निकल पड़े। चारों ओर पसरा सन्नाटा, अंधेरे में भौंकते कुत्तों का शोर साफ दर्शा रहा था कि सभी नींद के आगोश में डूबे हैं। अचानक बलदेव सिंह के कदम एक घर की खुली खिड़की पर जाकर ठिठक गए।

–अजी सुनिए खाना खा लीजिए काफी समय हो गया है। क्या सारी रात हिसाब–किताब ही करते रहेंगे? दिन भर तो शरीर को आराम देते नहीं कम से कम रात को ही समय से विश्राम कर लिया करो। न स्वयं सोते है न दूसरों को सोने देते हैं।– यह बात बलदेव सिंह ध्यान से सारी वार्ता सुन रहे थे।

–भाग्यवान यदि मैं आराम करने बैठ गया तो मेरा धन्धा बैठ जायेगा और हम कंगाल होकर रोजी–रोटी को मोहताज हो जायेंगे क्या तुम यही चाहती हो?– घर से किसी व्यापारी सेठ व उसकी पत्नी की बातें ध्यान से सुनकर बलदेव सिंह चुपचाप गरीब बस्ती की ओर चल दिये। किसी घर में दीपक का

उजाला नहीं था। सभी आराम की नींद सो रहे थे। यह देखकर बलदेव सिंह मंद–मंद मुस्करा कर राजमहल में लौट आए। सुबह हुई नित्य की भाँति राजदरबार लगा। व्यापारी और नौकर उपस्थित हुए सभी के सम्मुख बलदेव सिंह ने अपना फैसला सुनाते हुए कहा कि यह ठीक है कि व्यापारी के पास अथाह धन सम्पदा है जिससे मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध हैं वह खुश अवश्य है लेकिन मानसिक व आत्मिक संतुष्टि बिल्कुल नहीं है। और जो व्यक्ति अपने जीवन में संतुष्ट नहीं रह सकता वह सुखी कैसे हुआ? यह मजदूर गरीब अवश्य है लेकिन मेहनत से जो कुछ कमाता है, उसी में संतोष करता है और आने वाले भविष्य के प्रति भी उसे कोई चिंता नहीं है। इसलिए मेरी राय में सबसे सुखी व्यक्ति यह मजदूर है, व्यापारी नहीं।– राजा बलदेव सिंह के तर्कपूर्ण न्याय से दरबार में उपस्थित सभी लोगों ने उनकी बुद्धिमानी की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

प्रस्तुति : अभयकुमार जैन

राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय महत्वपूर्ण दिवस

हमारे देश में विभिन्न जाति, सम्प्रदाय के लोग निवास करते हैं। त्योहारों, राष्ट्रीय त्योहारों के अतिरिक्त जयन्तियां भी मनाई जाती हैं। इनके अलावा वर्ष में कई महत्वपूर्ण राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय दिवस भी मनाये जाते हैं, जो विविधता में एकता का प्रतीक हैं।

हिन्दू संस्कृति में मकर संक्राति ही ऐसा त्योहार है जो 14 जनवरी को मनाया जाता है। बाकी के होली, दिपावली, रक्षाबंधन, गुरु नानक जयन्ती, महावीर जयन्ती, बुद्ध पूर्णिमा, ईद, इत्यादि त्योहार एवं जयन्तियां निश्चित दिनांक पर नहीं आती हैं, तिथियों के अनुसार आती हैं।

'बड़े दिन' अर्थात् 'क्रिसमस डे' को एक निश्चित तारीख 25 दिसम्बर को ही मनाया जाता है।

राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय दिवस

जनवरी 14 : मकर संक्रांति
15 : थल सेना दिवस
23 : नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती
26 : गणतन्त्र दिवस
30 : शहीद दिवस

फरवरी 28 : राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

मार्च 04 : राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस
08 : अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस
14 : विश्व उपभोक्ता दिवस
17 : समुद्री परिवहन दिवस
20 : विश्व विक्लांग दिवस
23 : भगत सिंह पुण्य दिवस

अप्रैल 07 : विश्व स्वास्थ्य दिवस
14 : अग्निशमन सेवा दिवस
22 : विश्व भू दिवस

मई 01 : मजदूर दिवस
04 : रेडक्रास दिवस
31 : विश्व तम्बाकू निवारण दिवस

जून 05 : विश्व पर्यावरण दिवस

जुलाई 11 : विश्व जनसंख्या दिवस

अगस्त 15 : स्वतन्त्रता दिवस

सितम्बर 14 : राष्ट्रीय राजभाषा दिवस

अक्टूबर प्रथम सोमवार : विश्व आवास दिवस
02 : गाँधी व शास्त्री जयन्ती / राष्ट्रीय स्वच्छता दिवस
09 : विश्व डाक दिवस
10 : विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस
14 : विश्व मानक दिवस
15 : विश्व खाद्य दिवस
24 : संयुक्त राष्ट्रसंघ दिवस
30 : विश्व बचत दिवस

नवम्बर 14 : बाल दिवस
17 : प्रादेशिक सेना दिवस / विश्व स्वास्थ्य दिवस
19 : नागरिक दिवस / इन्दिरा गाँधी जयन्ती
25 : मांसाहार रहित दिवस

दिसम्बर 01 : विश्व एड्स दिवस
04 : नौसेना दिवस
07 : झण्डा दिवस
08 : बालिका दिवस
10 : मानव अधिकार दिवस
11 : यूनिसेफ दिवस
14 : राष्ट्रीय ऊर्जा दिवस
23 : किसान दिवस
25 : क्रिसमस डे

लेख : डॉ. परशुराम शुक्ल

अरुणाचल प्रदेश और नागालैण्ड का राजकीय पशु-मिथुन

मिथुन एक रोचक पहाड़ी जीव है। इसका वैज्ञानिक नाम बॉस फ्रंटेलिस है। मिथुन को कुछ लोग गयाल भी कहते हैं। यह एक अर्ध पालतू जीव है। मिथुन में गाय और गौर के अनेक गुण पाये जाते हैं, किन्तु इसे न तो गाय के समान पालतू बनाया जा सकता है और न ही यह गौर के समान पूर्णतया जंगली है। यह प्रातःकाल होते ही पर्वतीय जंगलों में पहुँच जाता है और दिनभर चरता है एवं शाम को अंधेरा होने के पूर्व गाँव वापस आ जाता है।

मिथुन भारत और इसके आसपास के कुछ देशों में ही पाया जाता है। यह केवल भारत, भूटान, बांग्लादेश और म्यांमार (बर्मा) के पर्वतीय वनों और लम्बी घास वाले भागों में मिलता है।

भारत में यह लगभग सभी उत्तर–पूर्वी राज्यों– आसाम, मेघालय, मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, नागालैण्ड और त्रिपुरा में बहुत बड़ी संख्या में पाया जाता है।

अरुणाचल प्रदेश और नागालैण्ड ने तो इसे अपना राज्य पशु घोषित किया है।

मिथुन पर्वतीय जंगलों में पाया जाने वाला जीव है। यह हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों में 600 मीटर से लेकर 3000 मीटर तक की ऊँचाई वाले भागों में पाया जाता है। मिथुन की उत्पत्ति के सम्बन्ध में जीव वैज्ञानिकों में मतभेद हैं। कुछ जीव वैज्ञानिकों का मत है कि मिथुन गौर की पालतू प्रजाति है। इनका मानना है कि भारत के उत्तर पूर्वी सीमावर्ती राज्यों के लोगों ने वनों में रहने वाले कुछ जीवों को पालतू बनाने का प्रयास किया। इस प्रयास में इन्हें आंशिक सफलता भी मिली तथा बहुत से गौर अर्ध पालतू बन गये। यही गौर आगे चलकर मिथुन कहलाये।

कुछ वैज्ञानिकों का मत है कि मिथुन गाय और गौर की संकर प्रजाति है। इसकी शारीरिक संरचना गाय की अपेक्षा गौर से अधिक मिलती–जुलती है। मिथुन गाय से बड़ा होता है एवं गौर से छोटा होता है। मिथुन के कंधों तक की ऊँचाई 145 सेन्टीमीटर से 160 सेन्टीमीटर तक एवं वजन 250 किलोग्राम से लेकर 540 किलोग्राम तक होता है। मादा मिथुन नर से छोटी होती है तथा इसका वजन भी नर से कम होता है। नर मिथुन के शरीर का रंग गहरा भूरा होता है, जबकि मादा का रंग हल्का भूरा होता है। कभी–कभी काले अथवा मटमैले रंग वाले मिथुन भी देखने को मिल जाते हैं। कुछ मिथुन ऐसे भी होते हैं, जिनके शरीर पर सफेद रंग की चितियां अथवा धब्बे होते हैं। मिथुन की त्वचा पतली और चिकनी होती है तथा इस पर छोटे–छोटे मुलायम बाल होते हैं। इसकी पीठ पर एक कूबड़ होता है, जिसे स्थानीय भाषा में 'लिसू' कहते हैं। मिथुन की पूँछ गाय के समान होती है तथा इसके अन्त में बालो का गुच्छा होता है।

मिथुन सामने से देखने पर गौर की तरह दिखाई देता है, किन्तु यह गौर के समान शानदार नहीं होता तथा बड़ा सीधा–सादा दिखाई देता है। इसका शरीर गठा हुआ और भारी होता है। मिथुन के कंधे चौड़े और मजबूत होते हैं। इसके पैर गौर के समान छोटे होते हैं तथा इसके घुटनों के नीचे का भाग सफेद होता है, किन्तु सींग गाय के समान छोटे और सीधे होते हैं। कभी–कभी मुड़े सींगों वाले मिथुन भी देखने को मिल जाते हैं। मिथुन का माथा चपटा और चौड़ा होता है।

मिथुन एक शाकाहारी प्राणी है। इसका प्रमुख भोजन पर्वतीय जंगलों में पायी जाने वाली घास, वृक्षों की पत्तियां, अन्य फल–फूल तथा विभिन्न प्रकार की वनस्पतियां आदि हैं। गाय ऊँचे–नीचे पहाड़ों पर नहीं चढ़ पाती। इसके विपरीत मिथुन को ऊँचे पथरीले भागों पर चढ़ने और उतरने में कोई असुविधा नहीं होती। मिथुन एक सीधा और सरल प्राणी है। यह तेज गर्मी बर्दाशत नहीं कर पाता। अतः अपना दिन का समय किसी चट्टान की बगल में अथवा छायादार वृक्षों के नीचे

व्यतीत करता है और रात में चरता है। मिथुन प्रायः अंधेरा होते ही अपने झुण्ड के साथ चरना आरम्भ कर देता है और प्रातःकाल तक चरता है। झुण्ड का सर्वाधिक शक्तिशाली और अनुभवी नर झुण्ड़ का नेतृत्व करता है। कभी–कभी रात के समय इसके झुण्ड पर्वतीय वनों के मध्य स्थित गाँवों के पास भी पहुँच जाते हैं, किन्तु ये ग्रामवासियों को कोई नुकसान नहीं पहुँचाते।

मिथुन के विषय में जैसा अभी बताया जा चुका है कि यह एक अर्ध पालतू जीव है। इसे गाय, बैल, भैंस, बकरी, भेड़ आदि के समान पालतू बना कर पशुशालाओं में नहीं रखा जा सकता बल्कि हाथी के समान यह पालतू होते हुए भी स्वतंत्र जीवन पसन्द करता है। हाथी को तो पैरों में जंजीर बाँध कर हाथीखाने में रखा भी जा सकता है, किन्तु यदि मिथुन को अधिक समय तक पशुशाला में रखा जाये तो यह बीमार हो जाता है और शीघ्र ही इसकी मृत्यु हो जाती है।

मिथुन बड़ा सीधा और सरल प्राणी है। सामान्यतया गाँव के लोग आवश्यकता पड़ने पर इसे जंगल से पकड़ लाते हैं और अपने घरों में कुछ समय रखते हैं तथा चारा खिलाते हैं। इससे मिथुन अर्ध पालतू बन जाता है। मिथुन को अधिक समय तक घर पर नहीं रखा जा सकता, अतः इसका मालिक इसके शरीर के किसी भाग पर कोई गुदना अथवा चिह्न बना देता है, जिससे इसे पहचाना जा सके। आजकल गुदने और चिह्न के स्थान पर कुछ लोग टैग अथवा पट्टी बाँधने लगे हैं। इसके बाद इसे शाम के समय छोड़ दिया जाता है। अब मिथुन पुनः जंगल में पहुँच जाता है और चरता है।

मादा मिथुन का गर्भकाल 9 माह का होता है। गर्भकाल पूरा होने पर मादा बच्चों को जन्म देती है और उसे अपना दूध पिलाती है। यह हमेशा एक बच्चे को जन्म देती है, किन्तु जुड़वां बच्चे भी अपवाद नहीं है।

मिथुन के नवजात बच्चे का वजन 20 किलोग्राम से लेकर 25 किलोग्राम तक होता है। यह जन्म के कुछ समय बाद ही उठ कर खड़ा हो जाता और मादा का दूध पीने लगता है। मादा मिथुन प्रायः पर्वतीय जंगलों में किसी सुरक्षित स्थान पर बच्चे को जन्म देती है और उसकी सुरक्षा करती है। इसे तेंदुए से बचाना आवश्यक है। तेंदुआ इसका प्रमुख शत्रु है। वह इसकी गंध मिलते ही इसके पास पहुँच जाता है और इसे मार डालता है।

पालतू मिथुन के बच्चे पूर्णतया सुरक्षित रहते हैं, क्योंकि इनके मालिक मादा मिथुन का थोड़ा सा ही दूध निकालते हैं और शेष दूध नवजात बच्चे के लिए छोड़ देते हैं। कभी–कभी तो मादा मिथुन के मालिक इसका केवल एक समय ही दूध निकालते हैं। मादा मिथुन बच्चे को लगभग 6 माह तक दूध पिलाती है और फिर कुछ बड़ा हो जाने पर इसे अपने साथ चरने के लिए पर्वतीय जंगलों में ले जाना आरम्भ करती है।

बाल कविता : महेन्द्र कुमार वर्मा

भारत देश हमारा प्यारा

भारत देश हमारा प्यारा,
सारे विश्व से है न्यारा।

अलग–अलग हैं रूप–रंग,
अलग–अलग जीने का ढंग,
पर सभी एक सुर में गाते,
झण्डा ऊँचा रहे हमारा।

हर प्रदेश की अलग जुबान,
पर मिठास की उनमें शान,
अनेकता में एकता पिरोकर,
सबने मिल–जुल देश संवारा।

लगा रहा है भारत सारा,
'हम सब एक हैं' का नारा।

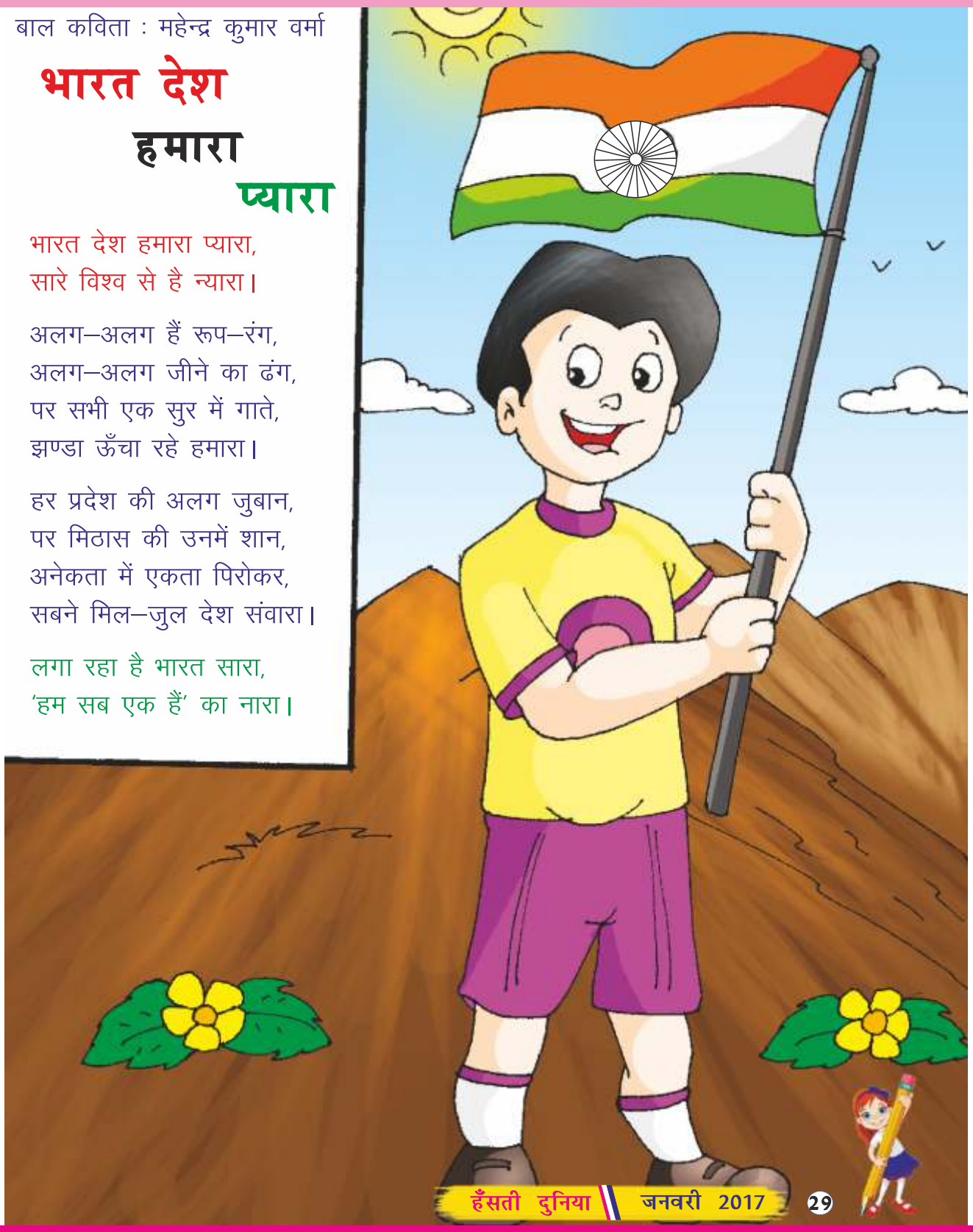

वैज्ञानिक जानकारी :
डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : चांदी से बनी वस्तुओं को जंग क्यों नहीं लगता है?

उत्तर : चांदी एक अक्रियाशील धातु है। क्रियाशीलता–शृंखला में यह काफी नीचे है। पानी और वायुमंडलीय कार्बनडाईऑक्साइड (CO_2) के साथ यह कोई क्रिया नहीं करती है। अतः चांदी से बनी वस्तुओं को जंग नहीं लगता है।

प्रश्न : पानी में नमक क्यों घुल जाता है?

उत्तर : नमक अर्थात् सोडियम क्लोराइड (NaCl) की संरचना सोडियम (Na) और क्लोराइड (Cl) आयनों से मिलकर होती है। पानी में ये आयन मुक्त अवस्था में आ जाते हैं। परिणामस्वरूप नमक पानी में घुल जाता है।

प्रश्न : बेकिंग पाउडर डालने से केक क्यों फूल जाता है?

उत्तर : केक तैयार करते समय बेकिंग पाउडर का प्रयोग किया जाता है। जब बेकिंग पाउडर (सोडियम बाई कार्बोनेट एवं टार्टरिक अम्ल का मिश्रण) डालकर गर्म किया जाता है तो टार्टरिक अम्ल की क्रिया से सोडियम बाई कार्बोनेट कार्बनडाईऑक्साइड (CO_2) उत्पन्न करता है। इसी (CO_2) के कारण केक फूलता है। साथ ही केक हल्का व नर्म भी रहता है।

प्रश्न : प्रेशर कुकर से खाना जल्दी क्यों बन जाता है?

उत्तर : प्रेशर कुकर में अधिक वायुमंडलीय दबाव में पानी उबाला जाता है। दबाव बढ़ने से पानी का क्वथनांक (Boiling Point) बढ़ जाता है। परिणामस्वरूप, कुकर में रखी खाद्य सामग्री शीघ्र गल जाती है और खाना फटाफट तैयार हो जाता है।

प्रश्न : कई बार तरणताल (स्वीमिंग पूल) में तैरने से आंखें लाल क्यों हो जाती हैं?

उत्तर : कई बार तरणताल (स्वीमिंग पूल) में तैरना हानिकारक भी सिद्ध हो सकता है। सामान्य तौर पर तरणताल के पानी को जीवाणु मुक्त करने के लिए उसमें विरंजक चूर्ण (Bleaching Powder) मिला दिया जाता है। पानी में विरंजक चूर्ण की अधिकता के कारण कभी–कभी ऐसे जल में तैरने से आंखें लाल हो जाती हैं और सूज जाती हैं।

बाल कहानी : ओमदत्त जोशी

कव्वे की करतूत

प्राचीन काल की बात है। एक गाँव के बाहर एक घना पीपल का पेड़ था। उस पर कई पक्षियों ने अपने घोंसले बनाकर आसरा बना रखा था। उस की एक डाली पर एक चिड़ी और कव्वे का घोंसला भी बना हुआ था। एक डाली पर साथ–साथ रहने से उनमें मित्रता हो गई।

प्रातःकाल दोनों अपनी–अपनी भूख मिटाने के लिए दाना चुगने अथवा खाना खाने को चले जाते और पेट भरने के पश्चात् अपने–अपने घोंसले में आराम करते। एक दिन बातें करते–करते कव्वे ने चिड़ी के सामने एक प्रस्ताव रखा कि कल हम खिचड़ी बनायेंगे खूब मजे से खायेंगे।

चिड़ी ने मना करते हुए कहा– मैं तो ऐसे झंझट में नहीं पड़ना चाहती। पकी–पकायी सामग्री खाने को मिल जाती है तो फिर पकाने की क्या जरुरत है?

लेकिन कव्वे के बार–बार आग्रह करने पर चिड़ी मान गई। कव्वे ने कहा– हम नित्य अलग–अलग रह कर अपना पेट भरते हैं एक दिन साथ मिलकर भोजन करेंगे। इसमें बहुत आनन्द आयेगा। मित्रता में भी घनिष्टता बढ़ेगी।

चिड़ी ने जानने के लिए पूछा– इसके लिए क्या करना होगा?

कव्वे ने समझाते हुए कहा– देखो तुम्हें चावल के दाने लाने हैं और मुझे मूंग की दाल के दाने लाने है। फिर पानी के साथ हण्डियां में डालकर चूल्हे पर चढ़ा, आग लगा देंगे।

थोड़ी देर में हमारी खिचड़ी पक कर तैयार हो जायेगी। उसे फिर एक साथ मिलकर बड़े मजे से खायेंगे। बहुत स्वादिष्ट लगेगी।

चिड़ी इस कार्यक्रम से बहुत खुश हुई।

दूसरे दिन प्रातःकाल दोनों उठे। दोनों उड़ते–उड़ते चावल और दाल के दानें लेने हेतु गाँव की ओर चले गये। थोड़े से प्रयास से उन्हें चावल और दाल मिल गये। कव्वा, कुम्हार के घर से एक छोटी हण्डियां भी ले आया। चूल्हा बना, आग जली। हण्डियां में थोड़ा पानी डालकर चूल्हे पर चढ़ा दी। उसमें चावल और दाल डाल दिये। कव्वा बहुत चालाक और कपटी था। इसी कारण कोई उससे मित्रता नहीं करता था। उसके मन में चिड़ी के प्रति भी कपट की भावना रहती थी। थोड़ी देर में खिचड़ी पक गयी। हण्डियां में से उसके पकने की खुशबू आने लगी तो कव्वे ने कहा– अपनी खिचड़ी पक गयी है। मेरा तो मन इसे खाने को ललचा रहा है। अब हमें इसे शीघ्र खा लेनी चाहिए। लेकिन पीने के लिए पानी तो बिल्कुल ही नहीं है। खाने के बाद पानी तो जरूरी है। कव्वे ने चिड़ी की ओर ताकते हुए कहा।

चिड़ी बेचारी भोली–भाली जल्दी ही पानी लेने चली गयी। कव्वा इतनी देर नहीं रह सकता था। उसके पेट में चूहे कूद रहे थे।

उसने उठायी हण्डियां और फटाफट सारी खिचड़ी चट कर पेड़ की डाली पर जा बैठा। हण्डियां को ढ़ककर चूल्हे पर पहले जैसी स्थिति में रख दी। हारी–थकी चिड़ी पानी लेकर आयी तो उसे कव्वा दिखाई नहीं दिया। इधर–उधर कव्वे को खोजने लगी। एकाएक उसकी दृष्टि पेड़ की डाली पर पड़ी जहाँ कव्वा बैठा था। जिसे खूब खाने से आलस्य आ रहा था। चिड़ी ने देखते ही कहा– कव्वे भैया! नीचे आओ ना, अब खिचड़ी खा लेते है?

कव्वे ने मरी–सी आवाज में कहा– 'मेरे तो पेट में दर्द हो रहा है। मैं बहुत परेशान हूँ इसलिए आराम करने के लिए डाली पर आ बैठा हूँ। तुम अकेले ही खिचड़ी खा लो।'

चिड़ी उसकी चाल समझ नहीं सकी। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि जो खाने की इतनी जल्दी कर रहा था। उसके पेट में एकाएक दर्द कैसे होने लगा? निश्चित रूप से दाल में कोई काला है। ऐसे सोचते–सोचते उसने चूल्हे पर ढ़की हण्डियां का ढक्कन उठाया तो देखकर उसकी आँखें फटी की फटी रह गई। यह क्या? इसमें खिचड़ी का एक दाना भी नहीं? उसे समझते देर नहीं लगी कि यह सब कव्वे की करतूत है।

उसने क्रोधित हो, कव्वे को कहा– भैया, यह क्या किया तुमने? सारी की सारी खिचड़ी चट्ट कर गये। मेरे लिए कुछ भी नहीं रखा? क्या इसी तरह घनिष्टता की दोस्ती निभाओंगे?

कव्वे ने सफाई देते हुए कहा– 'नहीं! ऐसा नहीं हो सकता। मेरे तो पेट में दर्द है। मैं कैसे सारी खिचड़ी खा सकता हूँ। यदि तुम चाहो तो किसी से भी सच्चाई की परीक्षा करवा सकती हो।'

चिड़ी ने कहा– अच्छा तुम्हें कुएं में लगे झूले पर झूलना होगा। यदि झूला टूट गया तो तुम झूठे और नहीं टूटा तो सच्चे। चिड़ी ने कच्चे सूत के धागे के दोनों छोरों को कुँएं में लटका कर बाँध दिये। अब कव्वे को उस पर झूलने को कहा। कव्वा पहले तो सकपकाया लेकिन अपनी सच्चाई को प्रकट करने के लिए सूत के झूले पर बहुत धीरे–धीरे बैठ गया। बैठते ही सूत का धागा टूटा, कव्वेराम जी पानी में डुबकियां लगाने लगे।

चिड़ी ने कहा– डूब कर मर जाओंगे, अपनी करनी का फल पाओंगे।

कव्वे ने साहस दिखाते हुए कहा– हम तो मौज उड़ायेंगे, मल–मल कर नहायेंगे।

धीरे–धीरे कव्वा, कुएं की दीवार के सहारे पर ठहर गया। पंख भीगे होने के कारण उड़ नहीं सकता था। चिड़ी को उस पर दया आ गयी। उसने उड़ते हुए बाज पक्षी से कहा– भैया! भैया जरा इस कुएं में पड़े मेरे मित्र को तो निकाल दो।

बाज ने कव्वे को देखकर कहा– यह तो मेरा शिकार है। तुम्हें इस पर दया दिखाने की आवश्यकता नहीं है। यह कपटी और धोखेबाज है यह किसी का मित्र नहीं हो सकता। ऐसा कह कर उसने एक ही झटके में कव्वे को अपने पंजों में पकड़ लिया और आकाश में उड़ गया। कव्वे को बहुत दूर ले जाते हुए चिड़ी देखती रही। एक लम्बी सांस छोड़ते हुए चिड़ी के मुँह से एकाएक निकला– धोखेबाज एवं लालचियों की यही दशा होती है।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

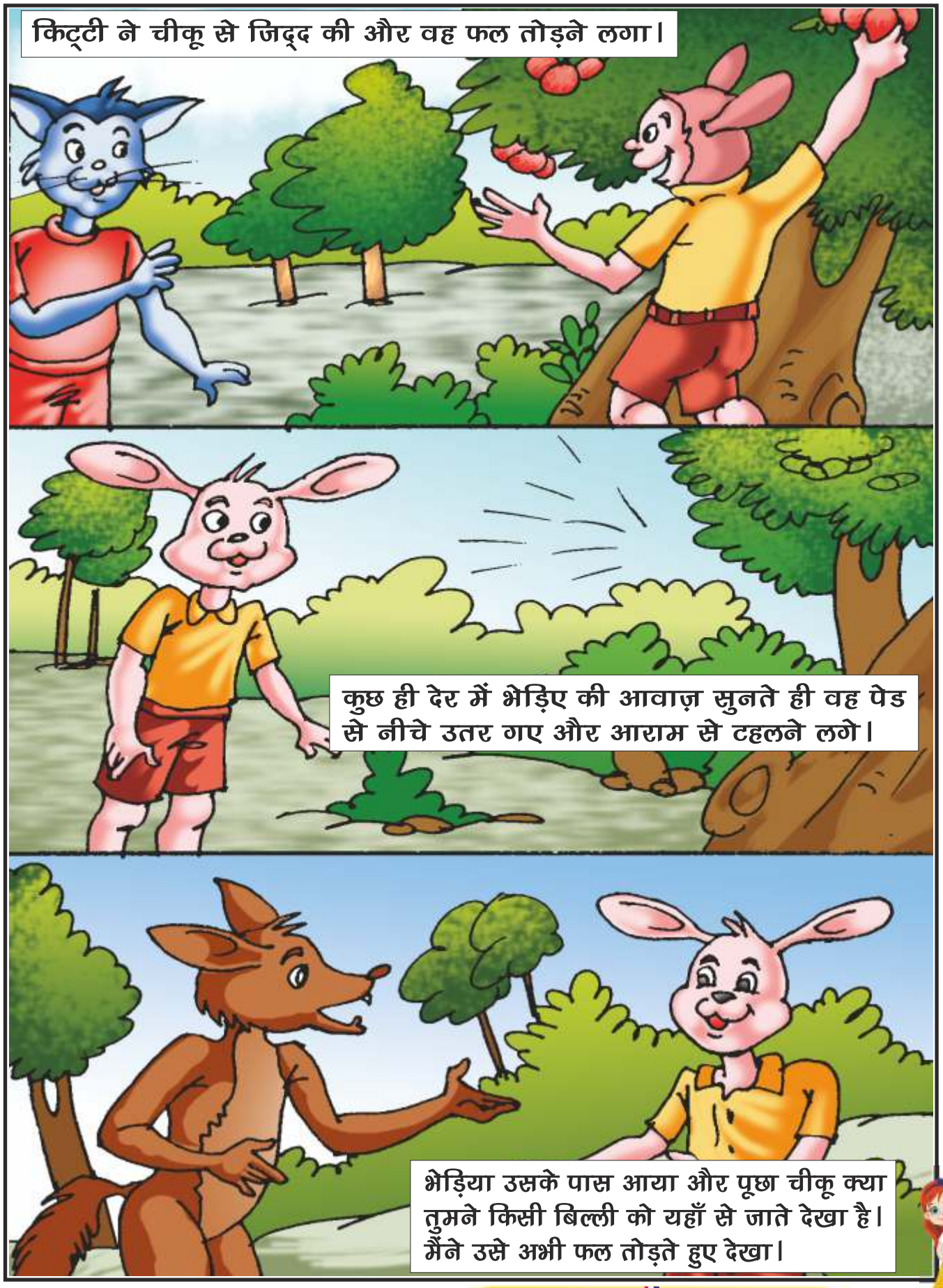
किट्टी ने चीकू से जिद्द की और वह फल तोड़ने लगा।
कुछ ही देर में भेड़िए की आवाज़ सुनते ही वह पेड से नीचे उतर गए और आराम से टहलने लगे।
भेड़िया उसके पास आया और पूछा चीकू क्या तुमने किसी बिल्ली को यहाँ से जाते देखा है। मैंने उसे अभी फल तोड़ते हुए देखा।

चीकू बोला – जी गबरू जी वह इस ड्रम में है और भेड़िया ये सुनते ही पास में पडे ड्रम में घुस गया।
भेड़िया जैसे ही ड्रम में घुसा वैसे ही चीकू और किट्टी ने ड्रम का ढ़क्कन बन्द किया और वहाँ से भाग निकले।
दोनों भागते-भागते घर पहुँचे और हांफते-हांफते चीकू बोला- किट्टी आज के बाद मैं ऐसा कुछ नहीं करूँगा। जिससे हमें ऐसा करना पड़े।

आज तो मैं भी डर गई थी चीकू
पर तुम्हारी सूझ-बूझ से हम बच गए।
चल अब घर चलते हैं। चल Bye!
किट्टी दरवाज़ा खोलो कोई आया है।
Ding Dong!
कौन?
अच्छा मम्मी।
मैं गबरू भेड़िया
हा हा हा किट्टी मैं हूँ चीकू। डर मत।

बाल कविता : सुकीर्ति भटनागर

धूप

उजली–उजली धूप सुनहरी,
जब आंगन में आती है।
मीठी–मीठी सी गर्माई,
अंगों में भर जाती है।।

सर्दी की ठिठुरी दोपहरी,
बिना धूप के सूनी है।
मुट्ठी में भर गरम सिकाई,
नहीं अगर बिखराती है।।

ठंड के कारण बूढ़े–बच्चे,
बिस्तर में दुबके रहते।
पर खिड़की पर आते ही वह,
सबको बाहर लाती है।।

गुड़–गज्जक और मूंगफली,
भाती सबको सर्दी में।
धूप सुहानी सर्दी को तो,
मेवों सी मन भाती है।।

कहानी : राधेलाल 'नवचक्र'

बुढ़िया की अक्लमन्दी

एक था राजा – निपट मूर्ख। जो भी कोई उसके पास किसी तरह की फरियाद लेकर आता, वह उसका बेतुका फैसला सुना देता। जनता इससे काफी परेशान रहती।

किसी सेठजी के तिमंजिले मकान से बिल्कुल सटी एक गरीब बुढ़िया की झोपड़ी थी। बुढ़िया सुबह–शाम जब कोयले का चूल्हा जलाती तो उसका धुआँ ऊपर उठता। सेठजी के तिमंजिले मकान में वह धुआँ खिड़की के रास्ते जा पहुँचता। यह बात सेठजी को जरा भी अच्छी नहीं लगी। वह बुढ़िया के करीब आकर बोला, ''तुम जो चूल्हा जलाती हो, उसका धुआँ मेरे मकान के कमरे में जा पहुँचता है।''

''मैं क्या करूँ?'' बुढ़िया आगे बोली, ''धुएँ से बचने के लिए कमरे की खिड़कियां बन्द कर लिया करो।''

''खिड़कियां बन्द नहीं करूंगा।'' सेठ अकड़कर बोला। वह बुढ़िया को परेशान कर उसकी जमीन खरीदना चाहता था।

''मत करो।'' कहकर बुढ़िया चुप हो गयी। वह पहले की तरह चूल्हा जलाती रही। धुआँ होता, ऊपर उठता। खिड़कियों के रास्ते सेठजी के कमरे में जा पहुँचता।

सेठजी ने कई बार इसके बारे में बुढ़िया से कहा। मगर वह क्या करती। उसके पास कोई उपाय नहीं था। वह लाचार थी। ऐसे में सेठजी की बात एक कान से सुनकर दूसरे से बाहर निकाल देती। बकबक या तकरार नहीं करती।

आखिर में सेठजी ने एक दिन बुढ़िया को धमकी दी, ''देखता हूँ, तुम मेरी बातों पर बिल्कुल ध्यान नहीं देती हो, सुनकर अनसुनी करती हो। मैं राजा के पास जाकर फरियाद करूँगा।''

''जरूर करो।'' बुढ़िया विवश हो बोली।

और सचमुच एक दिन सेठजी ने राजा के पास जाकर बुढ़िया की शिकायत कर दी। दरबार में बुढ़िया की बुलाहट हुई। राजा ने बुढ़िया पर बिगड़ कर कहा, ''तुम्हारे चूल्हे

का धुआँ सेठजी के मकान के कमरे में जाता है। इससे उसके स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। तुम कुछ ऐसी व्यवस्था करो, जिससे तुम्हारे चूल्हे का धुआँ सेठजी के कमरे में नहीं जाए अन्यथा तुम्हारी झोपड़ी वहाँ से हटा दी जाएगी।''

बुढ़िया अच्छी तरह जानती थी कि राजा निपट मूर्ख है। कुछ भी फैसला दे सकता है। अतएव राजा की बात सुनकर उसे जरा भी अजरज नहीं हुआ और न घबराहट हुई। कुछ सोच–समझकर वह राजा से बोली, ''मेरी भी एक फरियाद है राजन।''

''कहो, अपनी फरियाद।''

''सेठजी के तिमंजिले मकान की वजह से मेरे आंगन में सूरज की रोशनी सुबह–सुबह नहीं आ पाती है जिससे मेरा स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन बिगड़ता जा रहा है। अगर सेठजी अपना मकान का ऊपरी हिस्सा तुड़वा लें तो धूप आ सकती है।'' कहकर बुढ़िया चुप हो गयी।

राजा अब सेठजी पर बिगड़ा, ''तुम्हारे ऊँचे मकान की वजह से सुबह की धूप बुढ़िया के आंगन में नहीं आ पाती है जिससे उसका स्वास्थ्य बिगड़ रहा है। ऐसे में उसे धूप मिले ऐसा कुछ करो या फिर अपना मकान तुड़वा कर छोटा करो।''

फैसला बेतुका था। सेठजी का माथा चकराया। बुढ़िया की अक्लमन्दी की भी उसने मन ही मन दाद दी।

दोनों परस्पर समझौता कर राज दरबार से बाहर आ निकले। सेठजी ने बुढ़िया को फिर कभी तंग–परेशान नहीं किया।

बाल गीत : लतिका धमेजा

पैगाम

सूरज रोज सुबह है आता।
जागो समय पर पाठ पढ़ाता।
चिड़ियाँ चीं–चीं कर आंगन में,
खुश रहना हमको सिखलाती।

चींटी दाना लेकर आती।
मेहनत का स्वरूप समझाती।
कोयल कू–कू गीत सुनाकर,
मधुर वचन का महत्व बताती।

तारों के संग चंदा आता।
मिलवर्तन का सबक सिखाता।
देखो बच्चों सुबह से शाम,
देती प्रकृति हमें पैगाम

बाल कविता : दिनेश 'दर्पण'

दरोगा की माफी

बने दरोगा गधेराम जी
गश्त लगाने आये,
देख सामने हाथी दा को
'हट पीछे' चिल्लाये।

पकड़ सूंड से हाथी दा ने
उसको दूर उछाला,
अगले ही पल गिरे धरा पर
खुला अक्ल का ताला।

बोले मुझको माफी दे दो
नहीं कभी अकड़ूँगा,
छोड़ के अपनी तानाशाही
सबके काम करूँगा।

रोचक जानकारी : राहुल शर्मा

देश-विदेश के विचित्र वृक्ष

देश–विदेश में ऐसे विचित्र वृक्ष पाए जाते हैं कि जिन्हें देखकर जादुई वृक्षों की कल्पना साकार होने लगती है। तिलिस्मी कहानियों में चलने–फिरने वाले, विषैली गैसे छोड़ने वाले, लोगों का रक्त चूसने वाले वृक्षों की बातें पढ़ते हैं। लेकिन आस्ट्रेलिया में सचमुच ऐसे वृक्ष होते हैं जो ऊपर से झुककर, आदमी के शरीर में अपने कांटे चुभोकर सारा रक्त चूस लेते हैं। आस्ट्रेलिया में ऐसे वृक्षों को 'चुम्बक वृक्ष' कहा जाता है। ऐसे वृक्षों को पहचान कर लोग इनसे दूर होकर गुजरते हैं लेकिन कोई न कोई जानवर उन वृक्षों का शिकार हो जाता है।

उत्तरी अमेरिका में 'काऊ ट्री' नामक एक ऐसा वृक्ष होता है जिसकी जड़ों से दूध निकाला जाता है। यह दूध बहुत गुणकारी होता है और गाय के दूध से बहुत मिलता–जुलता होता है। यही नहीं इस वृक्ष की छाल को तवे पर गर्म किया जाए तो रोटी की तरह फूल जाती है।

जावा के जंगलों में ऐसे कंटीले वृक्ष पाए जाते हैं जिनसे चिकना द्रव निकलता है जो बहुत भयंकर विषैला होता है। जंगलों में रहने वाले आदिवासी जंगली जानवरों से सुरक्षा के लिए बाणों पर इस विष को लगाकर जानवरों का शिकार करते हैं।

दक्षिण अमेरिका के मैरी प्रदेश में ऐसे वृक्ष होते हैं जिनके नीचे जमीन पर खूब पानी भरा रहता है। ऐसा लगता है कि रात

को खूब बारिश हुई है। जबकि वहाँ महीनों से बारिश नहीं होती है। रात को वृक्षों से पानी टपकता है और बारिश का आभास होता है। वैज्ञानिकों ने बताया है कि उन वृक्षों पर बहुत घने पत्ते होते हैं। उन पत्तों की एक विशेषता होती है कि वे वायुमंडल से बहुत सा पानी एकत्र करके नीचे टपका देते हैं और वृक्ष के नीचे जमीन पर बारिश का आभास होता है।

अफ्रीका में मेडागास्कर द्वीप पर केले के वृक्षों की तरह बड़े–बड़े पत्ते वाले वृक्ष होते हैं। इन वृक्षों के पत्तों को नीचे से काटने पर पानी निकलता है। जंगल में घूमने वाले लोग इस वृक्ष के पत्तों को काटकर खूब पानी पीते हैं। पत्तों से इतना पानी निकलता है कि तीन आदमी खूब पानी पी सकते हैं।

अपने देश के हिमालय पर्वत पर ऐसे वृक्ष पाए जाते हैं जो रात के समय रोशनी करते हैं। पहाड़ों पर काम करने वाले लोग इन वृक्षों की रोशनी के सहारे अपने गंतव्य तक पहुँच जाते हैं। वृक्षों से दूर–दूर तक रोशनी फैल जाती है।

मलेशिया में ऐसे वृक्ष पाए जाते हैं जो अपने आसपास के पौधों को खा जाता है। विशाल वृक्ष 'फिनरसबी जिकोसा' आसपास के पौधों पर झुककर उनकी हरियाली चूसकर उन्हें नष्ट कर देता है।

हँसती दुनिया पढ़िए
जीवन में आगे बढ़िए।

प्रस्तुति : विभा वर्मा

सर्दी से निपटने का एक तरीका यह भी

बच्चो, तुम सभी लोग सूती, ऊनी, रेशमी, टेरीकॉट, मखमली आदि की चादरें तो जानते होंगे, लेकिन क्या आप बिजली की चादरें भी जानते हो?

इंग्लैंड में स्थित यॉर्कशायर की एक फर्म ने सर्दियों में घर को गर्म रखने के लिए बहुत कम कीमत में बिजली की चादर का आविष्कार किया है। ये चादरें कमरों में कालीनों के नीचे बिछा दी जाती हैं जिससे फर्श का तापमान 75 डिग्री फारेनहाइट हो जाता है और उस पर आसानी से पैर रखे जा सकते हैं तथा साथ ही इससे कमरे की हवा भी गर्म बनी रहती है।

बिजली के इस चादर की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें शॉर्ट लगने का रत्तीभर भी खतरा नहीं होता क्योंकि इसके फिलामेंट की फौलादी तार की नलियों को एक ऐसे सख्त प्लास्टिक से ढक दिया गया है कि जिसे काटा नहीं जा सकता। यदि आप हथौड़े या छेनी से भी इससे तोड़ना चाहे तो सम्भव नहीं हो पाता। साथ ही इसमें खर्च भी अति सीमित होता है यानि एक घंटे में पाँच पैसा।

पढ़ो और हँसो

एक दिन बंता बाजार गया। रास्ते में एक चोर आकर उसका मोबाइल छीनकर भाग गया। पहले तो बंता उसके पीछे भागा, लेकिन थोड़ी देर बाद रूक गया और जोर से बोला– ले जा, ले जा... इसका चार्जर तो मेरे पास ही है।

★ ★ ★——★ ★ ★

मरीज : (डॉक्टर से) डॉ. साहब आपने सिर, बदन और जोड़ों में होने वाला दर्द बिल्कुल ठीक कर दिया। अब एक तकलीफ रह गई है कि मुझे पसीना नहीं आता।

डॉक्टर : चिन्ता मत करो, बिल देखकर आपकी यह तकलीफ भी दूर हो जाएगी।

★ ★ ★——★ ★ ★

पड़ोसी : मेहता साहब! मेरी खिड़की का काँच पत्थर मारकर तोड़ने वाला आपका लड़का है?

मेहता : नहीं, नहीं! वो तो मेरा भतीजा है मेरा लड़का तो आपके स्कूटर के टायर की हवा निकालता है।

★ ★ ★——★ ★ ★

अध्यापक : (शेरू से) तुमने कितने दिनों तक लगातार बारिश होते देखी है?

शेरू : एक दिन तक।

अध्यापक : क्यों दो दिन तक बारिश नहीं हो सकती?

शेरू : नहीं सर! क्योंकि बीच में रात भी तो आती है।

★ ★ ★——★ ★ ★

पुलिस : तूने चोरी क्यों की?

चोर : जी, दुकान पर लिखा था सुनहरा अवसर है लाभ उठाओ।

★ ★ ★——★ ★ ★

मम्मी : सुशील, आज जो पकौड़े हमने खाए हैं उनके बारे में अपने पापा को न बताना।

सुशील : नहीं बताऊँगा। अब देखो न! मैं और पापा कई बार बाजार जाकर आइसक्रीम खाते हैं। क्या मैंने कभी इस बारे में आपको बताया?

★ ★ ★——★ ★ ★

बस कण्डक्टर : (यात्री से) इतनी जगह पड़ी है आप बैठ क्यों नहीं जाते?

यात्री : मैं यहाँ बैठने नहीं आया हूँ, मुझे घर जल्दी पहुँचना है।

★ ★ ★——★ ★ ★

मनीष : (मुकेश से) दूध से दही बन गया इसको अंग्रेजी में क्या बोलूं?

मुकेश : 'द मिल्क वाज स्लीपिंग इन द नाइट एंड अर्ली इन द मॉर्निंग बिकम टाइट।'

★ ★ ★——★ ★ ★

साक्षी : ये लोग बॉल से क्या कर रहे हैं?

आनन्द : गोल कर रहे हैं।

साक्षी : लेकिन बॉल तो पहले ही गोल है और कितनी गोल करेंगे।

★ ★ ★——★ ★ ★

वेटर : आपने समोसे और पकौड़े को अन्दर से खा लिया, लेकिन बाहर का सारा छोड़ दिया। ऐसा क्यों?

कस्टमर : क्योंकि, डॉक्टर ने कहा है, बाहर का खाना मत खाओ।

★ ★ ★——★ ★ ★

एक लड़का ऐसे ही फोन घुमा रहा था कि किसी किरायने की दुकान का नम्बर मिल गया।

लड़का : आपके पास चीनी है?

दुकानदार : हाँ है।

लड़का : घी है?

दुकानदार : हाँ है।

लड़का : सूजी है?

दुकानदार : हाँ है।

लड़का : फिर आप सूजी का हलवा बना कर मेरे घर भेज दो।

★ ★ ★——★ ★ ★

– गुरचरन आनन्द (लुधियाना)

पप्पू : इंस्पेक्टर अंकल, मैं पुलिस स्टेशन देखने आया हूँ। तभी उसने दीवार पर लगी तस्वीरें देखीं, तो पूछा अंकल जी, ये तस्वीरें किनकी हैं?

इंस्पेक्टर बोला : ये अपराधियों की तस्वीरें हैं। जिन्हें पुलिस पकड़ने की कोशिश कर रही है।

पप्पू : तो आपने इन्हें तस्वीरें खिंचवाने के बाद जाने ही क्यों दिया?

★ ★ ★——★ ★ ★

पिताजी : (टिंकू से) बेटा! आज स्कूल में क्या खाया था?

टिंकू : मास्टर जी का थप्पड़ खाया था।

★ ★ ★——★ ★ ★

मंशु : अरे इस पोखरे से भाप क्यों निकल रही है?

मुकेश : लगता है मछलियां चाय बना रही हैं।

★ ★ ★——★ ★ ★

वर्ग पहेली के सही उत्तर

1 ज	य	2 ते		3 रा	त
ल		ह		धा	
से		4 रा	म	कृ	ष्ण
5 ना	6 दा	न		ष्ण	
	न		7 क	न	8 क
9 शि	व	से	ना		त
क्षा			10 डा	ल	र

जन्म दिन मुबारक

आरोश (दिल्ली)

इशान (दिल्ली)

मानस (मनीमाजरा)

नितप्रीत (दिल्ली)

नितिन (दिल्ली)

सार्थक (दिल्ली)

मायरा (फरीदाबाद)

अरमान (चण्डीगढ़)

आर्या (वर्धा)

विजयकुमार (नाथनगर)

शंशाक (मदनपुर)

उदितराज (नौपेड़वा)

समरपाल (धड्डेबावा)

हरप्रीत (सुखना अबलू)

ऋद्धम (चण्डीगढ़)

हृदयांश (दिल्ली)

नितिका (दिल्ली)

कर्तव्य (भोपाल)

लविश (पटियाला)

आदर्श (सैदपुर)

साधिक (कोल्हापुर)

दिया (कोल्हापुर)

अर्पित (अजमेर)

संकल्प (कोलकाता)

समर्थ (बांदा)

साधना (नाथनगर)

विधिता (पंचकुला)

मोहित (दतिया)

ममता (दिल्ली)

इस स्तम्भ के अन्तर्गत 10 वर्ष तक की आयु के बच्चों के फोटो भेज सकते हैं। जिस माह में बच्चे का जन्म दिन हो, उससे दो माह पूर्व केवल पासपोर्ट साइज का फोटो इस पते पर भेजें।

सम्पादक, हँसती दुनिया,
पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्पलेक्स,
निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9

फोटो के पीछे यह कूपनं चिपकाना अनिवार्य है।

नाम.....जन्म माह.....वर्ष.....

पता .....

.....

आपके पत्र मिले

सबको दी बधाई

सबको दी बधाई।
और खिलते फूलों ने
अपनी खुश्बू लुटाई।।
पर्वत सागर नदियां
खुशी से हैं गदगद।
नया साल सबको दे रहा
खुशियां देखो बेहद।।
मोर पपीहा कोयल
सब नाच गा रहे हैं।
सारे जंगल वासी आज
खुशी मना रहे हैं।।
नया साल देखो सबको
गले लगा रहा है।
नये साल की खूब बधाई
सबको बांट रहा है।।

– बद्रीप्रसाद वर्मा अनजान (गोरखपुर)

मैं पिछले 35 वर्षों से हँसती दुनिया की नियमित पाठक हूँ। इसमें दी गई कहानियां एवं कविताएं शिक्षाप्रद होती हैं। साथ में दी गई फोटो भी अच्छी होती है।

सितम्बर माह में कविता 'बेटी' (डॉ. परशुराम शुक्ल) बहुत पसन्द आई। हर महीने मौके के मुतबिक सामग्री हमारे त्योहारों एवं महत्वपूर्ण अवसरों की याद दिला देती है। इसकी कहानियों का उदाहरण बच्चों की संगत में सुनाते हैं। उम्मीद है हँसती दुनिया खूब तरक्की करेगी। – अमिता मोहन (भटिंडा)

हँसती दुनिया

यह नहीं है केवल किताब,
यह है ज्ञान का भंडार,
सब के मन को भाती,
सब के मन को लुभाती।
अजब है इसमें कहानियां,
गजब है इसमें किस्से,
सब पढ़ते इसको,
जवान, बूढ़े, बच्चे।
इसका एक अंक पढ़कर,
सब यही सोचते,
जल्दी से आ जाए,
इसका अगला अंक,
सब यही सोचते।

– रामचंदाणी (गाँधी नगर, कोल्हापुर)

सत्य

सत्य मार्ग पर चलेंगे हम।
मिलकर आगे बढ़ेंगे हम।
काम समय पर करेंगे हम।
नहीं किसी से डरेंगे हम।
प्रेम सभी से करेंगे हम।
नफरत नहीं करेंगे हम।
मिलजुल कर रहेंगे हम।
अच्छे मानव बनेंगे हम।

– हरजीत निषाद

नवम्बर अंक का रंग भरो परिणाम

1

साहिल सुथार
आयु 13 वर्ष
ग्राम व पोस्ट : 13 एम डी,
जिला : श्रीगंगानगर (राज.)

2

विवेक वर्मा
आयु 15 वर्ष
2115, सेक्टर 52,
चण्डीगढ़

3

कृतिका मीना
आयु 11 वर्ष
6/9, पंचशील कॉलोनी,
अजमेर (राज.)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

प्रेम प्रकाश (वार्ड 38, सरदार शहर),
यश (रायगढ़ बहेड़ा),
सिमरन (आदर्श नगर, फगवाड़ा),
शिवचन्द (राजपुर), दीप्ति (धनास),
यवनिका ठाकुर (भरमोटी कलां),
समीक्षा (सुन्दर नगर, अजमेर),
भव्यम (यादवेन्द्र इन्कलेव, पटियाला),
एकता (प्रिया अपार्टमेंट, अहमदाबाद),
अदिति (द मॉल, भटिण्डा),
अक्षदा (धामणी), सुदीक्षा (कवईया),
अवनीश (अशोक नगर, बहादुरगढ़),
कविता कुमारी (फुलवारी शरीफ, पटना),
राहत पुलानी (द्वारका, दिल्ली),
उर्वशी, वरुहा (बरोटीवाला),
अक्षिता चौधरी (कसौटी),
सोभ्या (से. 46–सी, चण्डीगढ़),
यशन (हुडको, नासिक),
अनाया (से. 38–सी, चण्डीगढ़),
आशीष कुमार (देहन)।

जनवरी अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में रंग भरकर 20 जनवरी 2017 तक कार्यालय **'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–110009** को भेज दें।

तीन सर्वश्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) मार्च अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।
चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।
15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेजें

रंग भरो

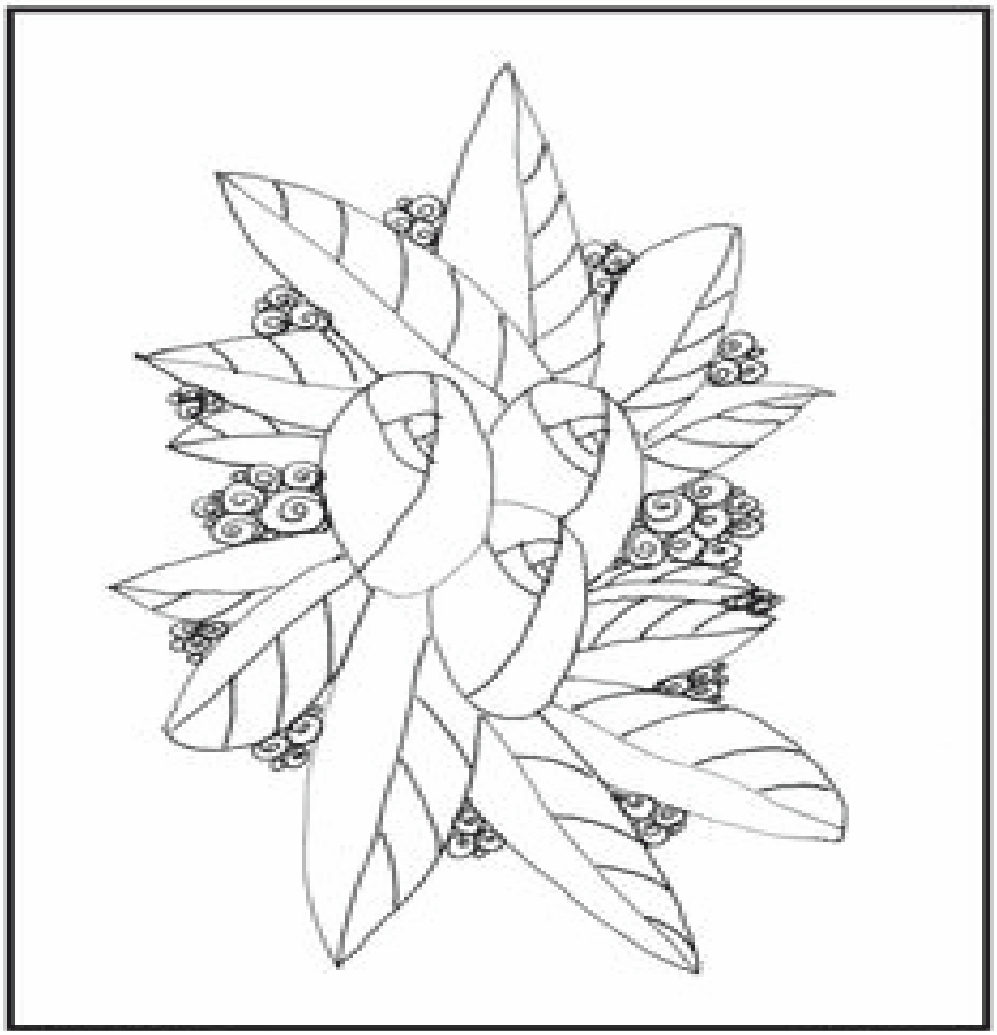

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

तितली को फूल तक पहुँचाइये। –प्रस्तुति : चाँद मोहम्मद घोसी

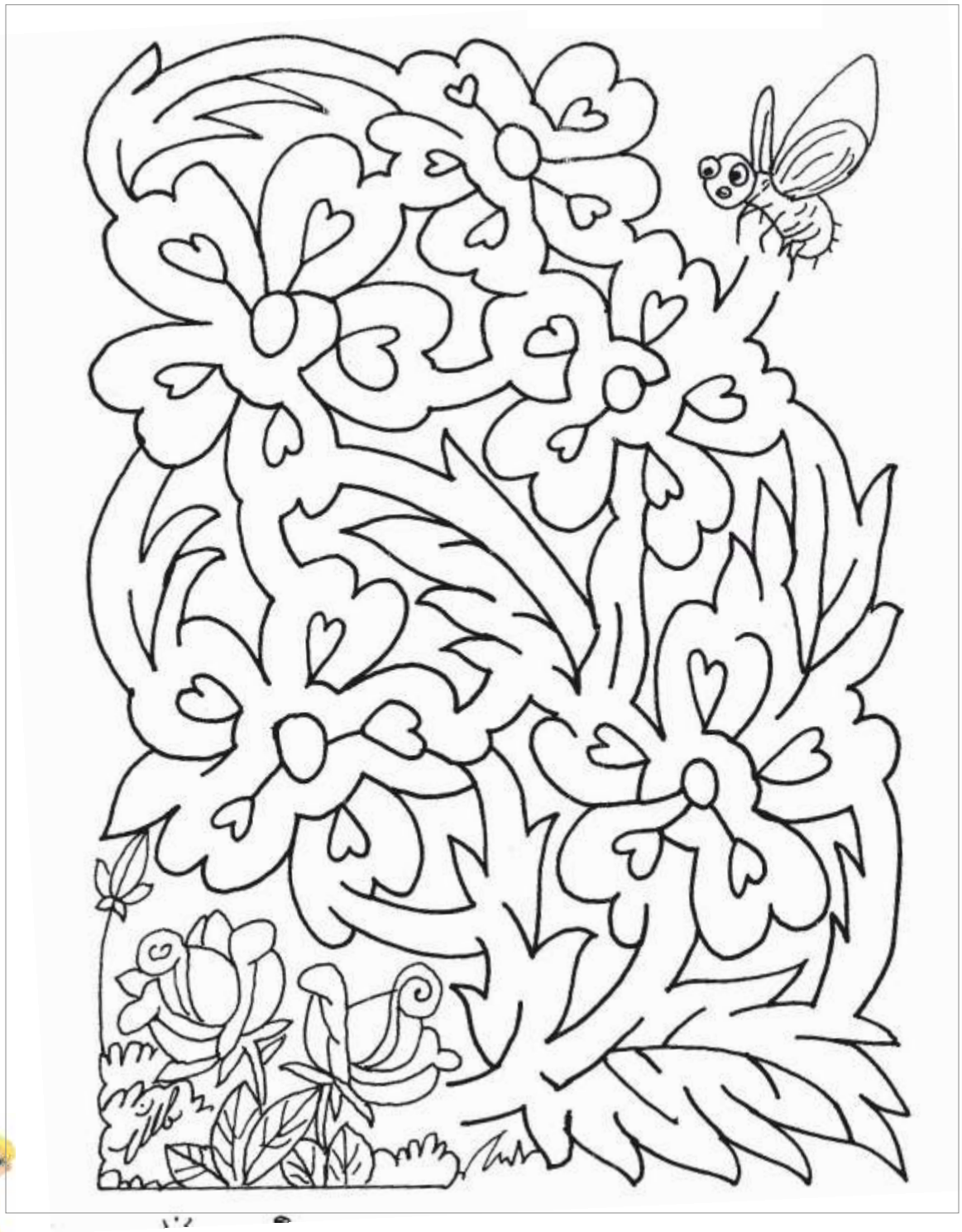

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

सन्त निरंकारी
(ग्यारह भाषाओं में)

एक नज़र
(तीन भाषाओं में)

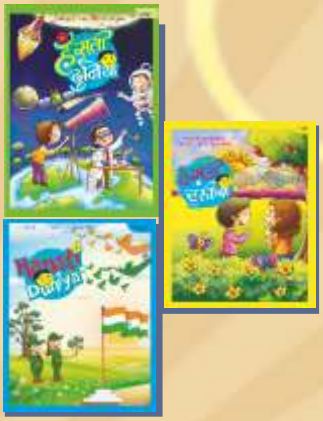

हँसती दुनिया
(चार भाषाओं में)

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें
पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009
011—47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

Sant Nirankari Satsang Bhawan
1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI-400 014 (Mah.)
e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

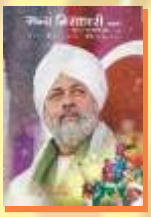

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL
Sant Nirankari Satsang Bhawan, #7, Govindan Street, Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai, CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA
Sant Nirankari Satsang Bhawan, Kazidiha, Post Madhupatna, CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU
Sant Nirankari Satsang Bhawan, No. 6-2-970, Khairtabad, HYDERABAD-Pin : 500 029
Ph. 0104-23317879

GUJRATI
Sant Nirankari Satsang Bhawan, 31, Pratapganj, VADODARA-390002 (Guj.)
Ph. 0285-275068

KANNADA
Sant Nirankari Satsang Bhawan, 88, Rattanvillas Road, Southend Circle, Basavangudi, BELGURU-560 004 (Karnataka)
Ph. 080-26577212

BANGLA
Sant Nirankari Satsang Bhawan, 1-D, Nazar Ali Lane, Near Beck Bagan, KOLKATA-700 019
Ph. 033-22871658

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Registered with the : Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2015-17
Registrar of Newspaper : Licence No. U (DN)-23/2015-17
For India Under RNI No. 25672/73 : Licenced to post without Pre-payment

Posted at IMBC/1 Prescribed dates 21th & 22nd. Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)